सहजानंद शास्त्रमाला

लघु जीवस्थान चर्चा

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी “सहजानन्द” महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

लघु जीवस्थान चर्चा

श्री १०५ क्षुल्लक मनोहर जी वर्णी
श्रीमत्सहजानन्द जी महाराज

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

(अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहरजी वर्णी
'सहजानन्द' महाराज द्वारा विरचित)

लघु जीवस्थानचर्चा

जीवस्थानचर्चा में से संक्षिप्त किये गये २६ स्थान :-

(१) गुणस्थान १४, (२) जीवसमास १४, (३) पर्याप्ति ६,
(४) प्राण १०, (५) संज्ञा ४, (६) गति मार्गणा ५ (४+१)
(७) इन्द्रियजातिमार्गणा ६ (५+१), (८) कायमार्गणा ७ (६+१),
(९) योगमार्गणा १६ (१५+१), (१०) वेदमार्गणा ४ (३+१),
(११) कषायमार्गणा २६ (२५+१), (१२) ज्ञानमार्गणा ८ (५+३),
(१३) संयममार्गणा ८ (५+१+१+१), (१४) दर्शनमार्गणा ४,
(१५) लेश्यामार्गणा ७ (६+१), (१६) भव्यत्वमार्गणा ३ (२+१)
(१७) सम्यक्त्वमार्गणा ६ (३+१+१+१)
(१८) संज्ञित्वमार्गणा ३ (२+१), (१९) आहारकमार्गणा २
(२०) उपयोग २, (२१) ध्यान १६, (२२) आस्रव ५७, (२३) भाव ५३
(२४) अवगाहना, (२५) जाति ८४ लाख, (२६) कुल १९७॥ लाखकोटि

गुणस्थान

गुणस्थान—मोह व योगके निमित्तसे होनेवाली आत्माके सम्यक्त्व और चारित्र गुणोंकी अवस्थाओंको गुणस्थान कहते हैं। गुणस्थान १४ होते हैं—

१ मिथ्यात्व, २ सासादनसम्यक्त्व, ३ मिश्रसम्यक्त्व, (सम्यग्मिथ्यात्व), ४ अविरत सम्यक्त्व, ५ देशविरत, ६ प्रमत्तविरत, ७ अप्रमत्तविरत ८ अपूर्वकरण (उपशमक व क्षपक), ९ अनिवृत्तिकरण (उपशमक व क्षपक) १० सूक्ष्मसाम्पराय, (उपशमक व क्षपक), ११ उपशान्त मोह, १२ क्षीण मोह, १३ सयोगकेवली, १४ अयोगकेवली।

(१) मिथ्यात्व—मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत जीवादि ७ तत्त्वोंमें यथार्थ श्रद्धान न होनेको मिथ्यात्व कहते हैं। मिथ्यात्वमें जीव देहको आत्मा मानता है तथा अन्य भी परपदार्थोंको अपना मानता है, कषाय परिणामोंसे भिन्न ज्ञानमात्र आत्माका अनुभव नहीं कर सकता है।

(२) सासादनसम्यक्त्व - उपशमसम्यक्त्व नष्ट हो जानेपर मिथ्यात्व का उदय न आ पाने तक अनन्तानुबन्धी कषायके उदयसे जो अयथार्थ भाव रहता है उसे सासादनसम्यक्त्व कहते हैं।

(३) सम्यग्मिथ्यात्व—जहां ऐसा परिणाम हो जो न केवल सम्यक्त्व रूप हो और न केवल मिथ्यात्वरूप हो, किन्तु मिला हुआ हो उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

(४) अविरतसम्यक्त्व—जहां सम्यग्दर्शन तो प्रकट हो गया हो, किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या संयम) न हुआ हो उसे अविरत सम्यक्त्व कहते हैं। इस गुणस्थानमें उपशमसम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व ये तीनों प्रकारके सम्यक्त्व हो सकते हैं।

(५) देशविरत—जहाँ सम्यग्दर्शन भी प्रकट हो गया हो और संयमा-

संयम भी होगया हो उसे देशविरत कहते हैं।

(६) प्रमत्तविरत—जहां महाव्रतका भी धारण हो चुका हो, किन्तु संज्वलन कषायका उदय मंद न होने से प्रमाद हो वह प्रमत्तविरत है।

(७) अप्रमत्तविरत—जहां संज्वलनकषायका उदय मंद होनेसे प्रमाद नहीं रहा उसे अप्रमत्तविरत कहते हैं। इसके दो भेद हैं १ स्वस्थान अप्रमत्त-विरत, २ सातिशय अप्रमत्तविरत। स्वस्थान अप्रमत्तविरत वे कहलाते हैं, जो श्रेणि में नहीं चढ़ सकेंगे तथा सातिशय अप्रमत्तविरत वे कहलाते हैं, जो श्रेणिमें याने अष्टम गुणस्थान में चढ़ जावेंगे किन्तु अभी सातवें गुणस्थान में हैं। स्वस्थान अप्रमत्तविरत मुनि छठवें गुणस्थानमें पहुंचते हैं और इस प्रकार छठेसे सातवें में, सातवें से छठे में परिणाम आते जाते रहते है।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनिके अधःकरण परिणाम होते हैं। वे यदि चारित्रमोहनीयका उपशम प्रारम्भ करते हैं तो उपशम श्रेणि चढ़ते हैं और यदि क्षय प्रारम्भ करते हैं तो क्षपकश्रेणि चढ़ते हैं। सो वे दोनों (उपशम या क्षपक श्रेणि चढ़नेवाले मुनि) आठवें गुणस्थान में पहुंचते हैं।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनिके परिणामका नाम अधःकरण इसलिये है कि इसके कालमें विवक्षित समयवर्ती मुनिके परिणामके सदृश कुछ पूर्व-उत्तरसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम हो सकते हैं।

(८) अपूर्वकरण—इस गुणस्थानमें अगले-अगले समयमें अपूर्व-अपूर्व परिणाम होते हैं। ये उपशमक व क्षपक दोनों तरह के होते हैं। इस परि-णामका अपूर्वकरण नाम इसलिये भी है कि इसके कालमें समानसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम सदृश भी हो जाँय, किन्तु विवक्षित समयसे भिन्न (पूर्व या उत्तर) समयवर्ती मुनियों के परिणाम विसदृश ही होंगे।

इस गुणस्थानमें (१) प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धि होती है, (२) कर्मोंकी स्थिति का घात होने लगता है (३) स्थितिबन्ध कम हो जाते हैं, (४)

बहुतसा अनुभाग नष्ट हो जाता है, (५) असंख्यातगुणी प्रदेश निर्जरा होती है, और (६) अशुभप्रकृतियां शुभ में बदल जाती हैं।

(९) अनिवृत्तिकरण इस गुणस्थान में चढ़ते हुये अधिक विशुद्ध परिणाम होते हैं, ये उपशमक व क्षपक दोनों प्रकारके होते हैं। इस परिणाम का अनिवृत्तिकरण नाम इसलिये है कि इसके कालमें विविक्षित समयमें जितने मुनि होंगे सबका समान ही परिणाम होगा। यहां भी भिन्न समय वालोंके परिणाम विसदृश ही होंगे। इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीयकी २० प्रकृतियोंका (अप्रत्याख्यानावरण ५, प्रत्याख्यानावरण ४, संज्वलन ३ हास्यादि ९) उपशम या क्षय हो जाता है।

(१०) सूक्ष्मसाम्पराय—नवमें गुणस्थान में होनेवाले उपशम या क्षय के बाद जब केवल संज्वलन सूक्ष्मलोभ रह जाता है, ऐसा जीव सूक्ष्मसाम्प-राय गुणस्थानवर्ती कहा जाता है, इस गुणस्थानमें सूक्ष्मसाम्परायचारित्र होता है जिसके द्वारा अन्तमें इस गुणस्थानवाला जीव सूक्ष्म लोभका भी उपशम या क्षय कर देता है।

(११) उपशान्तमोह—समस्त मोहनीय कर्म का उपशम हो चुकते ही जीव उपशान्तमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है। इस गुणस्थानमें यथाख्यात चारित्र हो जाता है, किन्तु उपशम का काल समाप्त होते ही दशवें गुणस्थानमें गिरना पड़ता है या मरण हो तो चौथे गुणस्थानमें एकदम आना पड़ता है।

(१२) क्षीणमोह—क्षपकश्रेणिसे चढ़ने वाला मुनि ही समस्त मोह-नीयके क्षय होते ही क्षीणमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है। इस गुणस्थान में यथाख्यातचारित्र हो जाता है तथा इसके अन्त समयमें ज्ञानावरण, दर्शना-वरण और अन्तरायकर्मका भी क्षय हो जाता है। (क्षपकश्रेणि से चढ़ने वाला मुनि ग्यारहवें गुणस्थानमें नहीं जाता है, वह दशवें गुणस्थानसे बारहवें गुणस्थानमें आजाता है)

(१३) सयोगकेवली—चारों घातिया कर्मके नष्ट होते ही यह आत्मा

सकल परमात्मा हो जाता है। इन केवली भगवानके जब तक योग रहता है तब तक उन्हें सयोगकेवली कहते हैं। इनके बिहार भी होता है, दिव्य-ध्वनि भी खिरती है। तीर्थङ्कर सयोगकेवली के समवशरणकी रचना होती है, सामान्य सयोगकेवलीके गन्धकुटीकी रचना होती है। इन सबका नाम अर्हन्त परमेष्ठी भी है। अन्तिम अन्तर्मुहुर्त में इनके बादर योग नष्ट होकर सूक्ष्म योग रह जाता है और अन्तिमसमयमें यह सूक्ष्म योग भी नष्ट हो जाता है।

(१४) अयोगकेवली—योगके नष्ट होते ही ये परमात्मा अयोगकेवली हो जाते हैं। शरीरके क्षेत्रमें रहते हुए भी इनके प्रदेशोंका शरीरसे सम्बन्ध नहीं रहता। इनका काल 'अ इ उ ऋ लृ' इन पांच ह्रस्व अक्षरोंके बोलनेके बराबर रहता है। इस गुणस्थान में उपान्त्य और अन्त्य समयमें शेष बची हुई ७२ और १३ प्रकृतियोंका क्षय हो जाता है। इसके बाद ही ये प्रभु गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान हो जाते हैं।

जीवसमास

जीवसमास—जिन सदृश धर्मों द्वारा अनेक जीवोंका संग्रह किया जा सके उन सदृश धर्मोंका नाम जीव समास है। ये १४ होते हैं—

१. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त, २. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त, ३. एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त, ४. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त, ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त, ६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त, ८ त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, ९, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, १०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, ११. असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, १३.संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४.संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त।

१. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त—जिन जीवोंके स्पर्शन इन्द्रिय है तथा बादर शरीर (जो दूसरे बादरको रोक सके और जो दूसरे बादरसे रुक सके) है और जिनकी शरीर पर्याप्ति भी पूर्ण होगई है वे एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त हैं। ये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति रुप पांच प्रकारके होते हैं।

२. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त—एकेन्द्रिय बादरोंमें उत्पन्न होने वाले जीव, उस आयुके प्रारम्भसे लेकर जब तक उनकी शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, बादर अपर्याप्त कहलाते हैं। इनमेंसे जो जीव ऐसे हैं कि जो पर्याप्ति पूर्ण न कर सकेंगे और मरण हो जाएगा उन्हें लब्ध्यपर्याप्त कहते हैं जिनकी पर्याप्ति पूर्ण अभी तो नहीं हुई, परन्तु पर्याप्ति पूर्ण नियम से करेंगे उन्हें निर्वृत्यपर्याप्त कहते हैं। इन जीवसमासोंमें अपर्याप्त शब्दसे दोनों अपर्याप्तोंका ग्रहण करना चाहिये।

३ एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त—जो जीव एकेन्द्रिय हैं, सूक्ष्म (जिनका शरीर न दूसरेको रोक सकता और न दूसरेसे रुक सकता व सूक्ष्म नाम कर्म का जिनके उदय है) एवं पर्याप्त हैं उन्हें एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त कहते हैं।

४. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त—एकेन्द्रिय,सूक्ष्म, अपर्याप्त जीवोंको एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त कहते हैं।

५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन रसना ये दो इन्द्रिय हैं तथा जो पर्याप्त हो चुके हैं उन्हें द्वीन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

६ द्वीन्द्रिय अपर्याप्त—उन द्वीन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निवृत्यपर्याप्त हैं, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

७ त्रीन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रिय हैं और जो पर्याप्त हो चुके हैं, उन्हें त्रीन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

८, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त—उन त्रीन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त—जिन जीवोंके स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियां हैं और जो पर्याप्त हो चुके हैं उन्हें चतुरिन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

१०. चतुरिन्द्रय अपर्याप्त—उन चतुरिन्द्रिय जीवोकों जो लब्ध्यपर्याप्त या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

११ असंज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु

और श्रोत्र ये पांचों इन्द्रियां हों, किन्तु मन नहो वे असंज्ञी पंचेन्द्रिय कहलाते हैं। वे पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय केवल तिर्यंचगतिमें होते हैं। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव भी केवल तिर्यंचगतिमें होते हैं।

१२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

१३. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त—संज्ञी अर्थात् मनसहित पचेन्द्रिय जीव पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं।

१४. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं, सज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

विशेष – सिद्ध भगवान अतीतजीवसमास होते हैं।

पर्याप्ति

पर्याप्ति - आहार वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणाके परमाणुओंको शरीर, इन्द्रिय आदिरूप परिणमावनेकी शक्तिकी पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं।

पर्याप्ति ६ हैं—(१) आहारपर्याप्ति, (२) शरीरपर्याप्ति, (३) इन्द्रियपर्याप्ति, (४) श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्ति, (५) भाषापर्याप्ति, (६) मनः पर्याप्ति।

१. आहारपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको खल और रस भागरुप परिणमावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको आहारपर्याप्ति कहते हैं।

२. शरीरपर्याप्ति—जिन परमाणुओंको खलरूप परिणमाया था उनको हाड़ वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उन

को रुधिरादिक द्रवरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको शरीरपर्याप्ति कहते हैं।

३. इन्द्रियपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको इन्द्रियके आकार परिणमावनेको तथा इन्द्रिय द्वारा विषय ग्रहण करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको इन्द्रियपर्याप्ति कहते हैं।

४. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओं को श्वासोच्छ्वासरूप परिणमावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति कहते हैं।

५. भाषापर्याप्ति—भाषावर्गणाके परमाणुओंको वचन रूप परिणमावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको भाषापर्याप्ति कहते हैं।

६ मनः पर्याप्ति—मनोवर्गणाके परमाणुओंको हृदयस्थानमें आठ पांखुड़ीके कमलाकार मनरुप परिणमावनेको तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको मनः पर्याप्ति कहते हैं।

विशेष—सिद्ध भगवानको अतीतपर्याप्त कहते हैं।

प्राण

प्राण–जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो व वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो, उनको प्राण कहते हैं।

प्राण १० हैं—

(१) स्पर्शनेन्द्रिय, (२) रसनेन्द्रिय, (३) घ्राणेन्द्रिय, (४) चक्षुरिन्द्रिय, (५) श्रोत्रेंन्द्रिय, (६) मनोवल (७) वचनवल, (८) कायवल, (९) आयु और (१०) श्वासोच्छ्वास।

विशेष—सिद्ध भगवान अतीतप्राण कहे जाते हैं।

संज्ञा

संज्ञा—वांछाके संस्कारको संज्ञा कहते हैं। ये संज्ञा ४ हैं—

(१) आहारसंज्ञा, (२) भयसज्ञा, (३) मैथुनसंज्ञा, और (४) परिग्रहसंज्ञा।

१. आहारसंज्ञा—आहारसम्बन्धी वांछाके संस्कारको आहारसंज्ञा कहते हैं।

२. भयसंज्ञा–भयसम्बन्धी परिणामके संस्कारको भयसंज्ञा कहते हैं।

३. मैथुनसंज्ञा-मैथुनसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको मैथुनसंज्ञा कहते हैं

४. परिग्रहसंज्ञा—परिग्रहसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको परिग्रह संज्ञा कहते हैं।

विशेष—दशम गुणस्थानसे ऊपरके जीव अतीतसंज्ञ कहलाते हैं।

मार्गणा

मार्गणा—जिन धर्मविशेषोंसे जीवोंकी खोज हो सके, उन धर्मविशेषों से जीवोंको खोजना मार्गणा है। ये १४ हैं—

(१) गति, (२) इन्द्रियजाति, (३) काय, (४) योग, (५) वेद, (६) कषाय, (७) ज्ञान (८) संयम, (९) दर्शन, (१०) लेश्या, (११) भव्यत्व, (१२) सम्यक्त्व, (१३) संज्ञी (१४) आहारक।

गतिमार्गणा

(१) गतिमार्गणा—गतिनामा नामकर्मके उदयसे उस गतिविषयक भावके कारणभूत जीवकी अवस्थाविशेषको गति कहते हैं। इसकी मार्गणा ५ हैं :—

(१) नरकगति, (२) तिर्यंचगति, (३) मनुष्यगति, (४) देवगति, (५) अगति याने गतिरहित।

१. नरक गति—इस पृथ्वीके नीचे सात नरक हैं उनमें नारकी जीव रहते है, उन्हें बहुत काल पर्यन्त घोर दुःख सहना पड़ता है, उनकी गतिको नरकगति कहते हैं।

२. तिर्यंच गति – नारकी, मनुष्य व देवके अतिरिक्त जितने संसारी जीव है वे सब तिर्यञ्च कहलाते है। एकेन्द्रिय (जिसमें निगोद भी शामिल हैं) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असैनी पंचेन्द्रिय ये तो नियमसे तिर्यञ्च ही हैं। उनकी गतिको तिर्यञ्च गति कहते हैं।

३. मनुष्यगति—स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकाएं मनुष्य कहे जाते हैं इनकी गतिको मनुष्यगति कहते हैं।

४. देवगति—भवनवासी, व्यन्तर, (जिनके निवास स्थान इस पृथ्वी के खरभाग व पङ्कभागमें है) ज्योतिष (सूर्य, चन्द्र, तारादि) व वैमानिक (१६ स्वर्ग, नव ग्रैवेयक नव अनुदिश, ५ अनुत्तरमें रहने वाले) इन चार प्रकारके देवोंकी गतिको देवगति कहते हैं।

५. अगति (गतिरहित)—गतिसे रहित जीवोंको गतिरहित कहते हैं, सिद्धोंके गति नहीं हैं, ये गतिरहित हैं।

इन्द्रियजाति-मार्गणा

इन्द्रियावरणके क्षयोपशमसे होने वाले संसारी आत्माके वाह्य चिह्न विशेषको इन्द्रिय कहते हैं। इसकी मार्गणा ६ हैं—

१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय, ५. पंचेन्द्रिय ६. अतीन्द्रिय।

एकेन्द्रिय आदि का वर्णन हो चुका है।

अतीन्द्रिय—जो इन्द्रियों (द्रव्येन्द्रिय व भावेन्द्रिय दोनों) से रहित हैं वे अतीन्द्रिय कहलाते हैं।

कायमार्गणा

आत्मप्रवृत्ति अर्थात् योगसे संचित पुद्गल–पिण्डको काय कहते हैं। इसकी मार्गणा ७ हैं :—

१. पृथ्वीकायिक, २. अप्कायिक (जलकायिक) ३. अग्निकायिक ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक, ६. त्रसकायिक, ७. अकाय।

जिनके पृथ्वी आदि शरीर हो वे पृथ्वीकायिक आदि कहलाते हैं।

अकाय–जिनके कोई प्रकारका काय नहीं रहा वे अकायिक (अकाय) कहलाते है :—

योगमार्गणा

मन, वचन, कायके निमित्तसे आत्मप्रदेशके परिस्पंद (हलन, चलन)

का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे योग कहते हैं। इसकी मार्गणा १६ हैं :—

१ सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. उभयमनोयोग ४. अनुभय मनोयोग, ५. सत्यवचनयोग, ६. असत्यवचनयोग, ७ उभयवचनयोग, ८. अनुभयवचनयोग, ९ औदारिककाययोग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग, ११. वैक्रियककाययोग, १२. वैक्रियकमिश्रकाययोग, १३. अहारककाययोग, १४. आहारकमिश्रकाययोग, १५. कर्माणकाययोग, १६ अयोग।

१. सत्यमनोयोग—सत्य वचनके कारणभूत मनको सत्य मन कहते हैं, उसके निमित्तसे होने वाले योगको सत्य मनोयोग कहते है।

२. असत्यमनोयोग—असत्य वचनके कारणभूत मनको असत्य मन कहते हैं और उसके निमित्तसे होने वाले योगको असत्य मनोयोग कहते हैं।

३. उभयमनोयोग—उभय (सत्य, असत्य दोनों) मनके निमित्तसे होने वाले योगको उभय मनोयोग कहते हैं।

४ अनुभय मनोयोग—अनुभय (न सत्य, न असत्य) मनके निमित्त से होने वाले योगको अनुभय मनोयोग कहते हैं।

५. सत्यवचनयोग—सत्य वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको सत्य वचनयोग कहते हैं।

६. असत्यवचनयोग—असत्य वचनके निमित्तसे होने वाले योगको असत्य वचनयोग कहते हैं।

७ उभयवचनयोग—उभय (सत्य, असत्य दोनों) वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको उभय वचनयोग कहते हैं।

८. अनुभयवचनयोग—अनुभय (न सत्य, न असत्य) वचनके निमित्त से होने वाले योगको अनुभय वचनयोग कहते हैं।

९. औदारिककाययोग—मनुष्य तिर्यञ्चोंके शरीरको औदारिककाय कहते हैं, उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे औदारिककाययोग कहते हैं।

१०. औदारिकमिश्रकाययोग—कोई प्राणी मरकर मनुष्य या तिर्यञ्च

गतिमें स्थानपर पहुंचा। वहाँ पहुंचते ही वह औदारिक वर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है उस समयसे अन्तर्मूहूर्त तक (जब तक शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माणमिश्रित औदारिक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीवके प्रदेशमें परिस्पंदके लिये जो उस जीवका प्रयत्न होता है उसे औदारिकमिश्रकायोग कहते हैं।

११. वैक्रियक काययोग—देव व नारकियोंके शरीरको वैक्रियक काय कहते हैं। उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे वैक्रियककाययोग कहते हैं।

१२. वैक्रियकमिश्रकाययोग—कोई मनुष्य या तिर्यञ्च मर कर देव या नरकगतिमें स्थानपर पहुंचा। वहां पहुंचते ही वह वैक्रियक वर्गणाओं को ग्रहण करने लगता है, उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जब तक शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माणमिश्रित वैक्रियक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो उस जीवका प्रयत्न होता है उसे वैक्रियकमिश्रकाययोग कहते हैं।

१३. आहारककाययोग—सूक्ष्मतत्त्वमें संदेह होनेपर या तीर्थवन्दनादि के निमित्त आहारक ऋद्धि वाले छटे गुणस्थानवर्ती मुनियोंके मस्तिष्कसे एक हाथका धवल, शुभ, व्याघातरहित आहारक शरीर निकलता है उसे आहा-रक काय कहते हैं, उसके निमित्तसे होनेवाले योगको आहारककाययोग कहते हैं।

१४. आहारकमिश्रकाययोग—आहारक शरीरकी पर्याप्ति जब तक पूर्ण नहीं होती तब तक औदारिक व आहारक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो प्रयत्न होता है उसे आहारक-मिश्रकाययोग कहते हैं।

१५. कर्माणकाययोग—मोड़ेवाली विग्रहगतिको प्राप्त चारों गतियोंके जीवोंके तथा प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवली जिनके कार्माण काय होता है, उसके निमित्तसे होनेवाले योगको कार्माणकाययोग कहते हैं।

१६. अयोग—अयोग केवली व सिद्ध भगवानके योग नहीं होता है।

योगरहित अवस्थाको अयोग कहते हैं ।

वेदमार्गणा

पुवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेदके उदयसे उत्पन्न हुई मैथुनकी अभिलाषा को वेद कहते हैं । इसकी मार्गणा ४ हैं :—

१. पुरुषवेद, २. स्त्रीवेद, ३. नपुंसक वेद, ४. अपगतवेद ।

१ पुरुषवेद—जिस भावमें स्त्रीके साथ रमण करने की इच्छा हो उसे पुरुषवेद कहते हैं ।

२. स्त्रीवेद—जिस भावमें पुरूषके साथ रमणकी इच्छा हो उसे स्त्रीवेद कहते हैं ।

३. नपुंसकवेद—जिस भावमें दोनोंके साथ रमण करनेकी इच्छा हो उसे नपुसंकवेद कहते हैं ।

४. अपगतवेद—जहां वेदका अभाव हो उसे अपगतवेद कहते हैं ।

कषाय-मार्गणा

जो आत्माके सम्यक्त्व, देशचरित्र,सकलचरित्र और यथाख्यात चरित्र रूप गुणको घाते उसे कषाय कहते हैं । इसकी मार्गणा २६ हैं :—

१—४. अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, ५—८. अप्रत्याख्यानाबरण क्रोध मान माया लोभ, ९—१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, १३—१६. संज्वलन क्रोध मान माया लोभ, १७ हास्य १८. रति, १९. अरति, २०. शोक, २१. भय, २२. जुगुप्सा, २३ पुरुषवेद, २४. स्त्रीवेद, २५. नपुसंकवेद, २६ अकषाय ।

१—४. अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते हैं जो आत्माके सम्यक्त्व गुणको घातें ।

५—८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया लोभ—उन्हें कहते हैं जो देशचारित्रको घातें । देशचारित्र श्रावकके अर्थात् पंचमगुणस्थानवर्ती जीवके होता है ।

९—१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते

हैं जो सकलचारित्रको घातें। (सकल चारित्र मुनियोंके होता है)।

१३—१६. संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते हैं जो यथाख्यातचारित्र को घातें (यथाख्यातचारित्र ११वें १२वें १३वें व १४वें गुणस्थानमें होता है)

१७. हास्य—हंसनेके परिणामको हास्य कहते हैं।

१८. रति—इष्ट पदार्थमें प्रीति करनेको रति कहते है।

१९. अरति—अनिष्ट पदार्थोंमें अप्रीति करनेको अरति कहते हैं।

२०. शोक—रंजके परिणामको शोक कहते है।

२१. भय—डरको कहते हैं।

२२. जुगुप्सा—ग्लानिको कहते हैं।

२३–२५. पुरूषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद—का वर्णन हो चुका।

२६. अकषाय—कषाय के अभावको कहते हैं।

ज्ञानमार्गणा

वस्तुके जाननेको ज्ञान कहते हैं। इसकी मार्गणा ८ हैं—

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मन:पर्ययज्ञान, ५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुतज्ञान, ८. कुअवधिज्ञान (विभंगावधि ज्ञान)। यहां मिश्र ज्ञानको कुमति आदि में शामिल किया है।

१. मतिज्ञान—इन्द्रिय और मनके निमित्तसे उत्पन्न होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं।

२. श्रुतज्ञान—मतिज्ञानसे जाने हुये पदार्थके सम्बन्धमें अन्य विशेष जाननेको श्रुतज्ञान कहते हैं।

३. अवधिज्ञान—इन्द्रिय और मनकी सहायताके विना, आत्मीय शक्तिसे रूपी पदार्थोंको द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्यादा लेकर जाननेको अवधिज्ञान कहते हैं।

४. मन:पर्ययज्ञान—दूसरेके मनमें तिष्ठते हुए (स्थित) रूपी पदार्थ को इन्द्रिय मनकी सहायताके विना आत्मीय शक्तिसे जाननेको मन:पर्यय ज्ञान कहते हैं।

५. केवलज्ञान—तीन लोक तीन कालवर्ती समस्त द्रव्य पर्यायोंको एक साथ स्पष्ट जानना केवलज्ञान है।

६. कुमतिज्ञान—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले मतिज्ञानको कुमति ज्ञान कहते हैं।

७. कुश्रुतज्ञान—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले श्रुतज्ञानको कुश्रुत ज्ञान कहते हैं।

८. कुअवधिज्ञान—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले अवधिज्ञानको कुअवधिज्ञान कहते हैं। इसका दूसरा नाम विभङ्गावधिज्ञान है।

संयममार्गणा

संयम—अहिंसादि पच व्रत धारण करना, ईर्यापथ आदि पाँच समितियोंका पालन करना, क्रोधादि कषायोंका निग्रह करना, मनोयोग आदि तीनों योगोंको रोकना, पांचों इन्द्रियोंका विजय करना सो सयम है। इसकी मार्गणा ८ हैं—

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहारविशुद्धि, ४. सूक्ष्मसाम्पराय, ५. यथाख्यात चारित्र, ६. असंयम, ७. संयमासंयम, ८, असंयम-संयम-संयमासंयम इन तीनोंसे रहित।

१. सामायिक—सब प्रकारकी अविरतिसे विरक्त होना व समताभाव धारण करना सामयिक सयम है।

२. छेदोपस्थापना—भेदरूपसे व्रतके धारण करनेको या व्रतोंमें छेद (भंग) होनेपर फिरसे व्रतोंके पालन करनेको छेदोपस्थापना संयम कहते हैं।

३. परिहारविशुद्धि—जिसमें हिंसाका परिहार प्रधान हो ऐसे शुद्धि प्राप्त संयमको परिहारविशुद्धि संयम कहते हैं।

४. सूक्ष्मसाम्पराय—सूक्ष्म कषाय (लोभ) वाले जीवोंके जो संयम होता है उसे सूक्ष्मसाम्पराय संयम कहते हैं।

५. यथाख्यात संयम—कषायके अभावमें जो आत्माका अनुष्ठान होता है उसमें निवास करनेको यथाख्यात संयम कहते हैं।

६. असंयम—जहां किसी प्रकारके संयम या संयमासंयमका लेश भी

न हो उसे असंयम कहते हैं।

७. संयमासंयम—जिसके त्रसकी अविरतिका त्याग हो चुका हो, जिनके अणुव्रतका धारण है उनके चारित्रको सयमासंयम कहते हैं।

८. असयम-संयम-संयमासयम-रहित—सिद्ध भगवान सदा अपने शुद्ध स्वरूपमें स्थित हैं उनके ये तीनों नहीं पाये जाते सो वे असंयम-संयम-सयमा संयम-रहित हैं।

दर्शन-मार्गणा

आत्माभिमुख अवलोकनको दर्शन कहते हैं, इसकी मार्गणा ४ हैं—

१. चक्षुर्दर्शन, २. अचक्षुर्दर्शन, ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन।

१- चक्षुर्दर्शन—चक्षुरिन्द्रियजन्य ज्ञानसे पहले होने वाले दर्शनको चक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२- अचक्षुर्दर्शन–चक्षुरिन्द्रियके अलावा अन्य इन्द्रिय व मनसे उत्पन्न होने वाले दर्शनको अचक्षुर्दर्शन कहते हैं।

३. अवधिदर्शन—अवधिज्ञानसे पहिले होनेवाले दर्शनको अवधिदर्शन कहते हैं।

४. केवलदर्शन—केवलज्ञानके साथ साथ होने वाले दर्शनको केवल दर्शन कहते हैं।

लेश्यामार्गणा

कषायसे अनुरंजित योगप्रवृत्तिको लेश्या कहते हैं, इसकी मार्गणा ७ है :—

१- कृष्ण लेश्या, २. नील लेश्या, ३. कापोत लेश्या, ४ पीत लेश्या, ५. पद्म लेश्या, ६. शुक्ल लेश्या, ७. अलेश्य।

१. कृष्णलेश्या—तीव्र क्रोध करने वाला हो, वैरको न छोड़े, लड़ने का जिसका स्वभाव हो, धर्म और दयासे रहित हो, दुष्ट हो जो किसीके वश न हो, ये लक्षण कृष्ण लेश्याके हैं।

२. नीललेश्या—काम करनेमें मन्द हो, स्वच्छन्द हो, कार्य करनेमें

विवेकरहित हो, विषयोंमें लम्पट हो, कामी, मायाचारी, आलसी हो, दूसरे लोग जिसके अभिप्रायको सहसा नहीं जान सकें, अतिनिद्रालु हो, दूसरोंको ठगनेमें चतुर हो, परिग्रहमें तीव्र लालसा हो, ये लक्षण नीललेश्याके हैं।

३. कापोतलेश्या—रूसे, निन्दा करे, द्वेष करे, शोकाकुल हो, भयभीत हो, ईर्ष्या करे, दूसरोंका तिरस्कार करें, अपनी विविध प्रशंसा करे, दूसरोंका विश्वास न करे, स्तुति करनेवाले पर सन्तुष्ट होवे, रणमें मरण चाहे, स्तुति करने वालोंको खूब धन देवे, अपना कार्य अकार्य न देखे ये लक्षण कापोतलेश्या के हैं।

४. पीतलेश्या—कार्य, अकार्य सेव्य असेव्यको समझने वाला हो, सर्व समदर्शी हो दया—परायण हो, दानरत कोमलपरिणामी हो। ये लक्षण पीतलेश्याके हैं।

५. पद्मलेश्या—त्यागी, भद्र, उत्तम कार्य करने वाला, सहनशील, साधुगुरुपूजारत हो। ये लक्षण पद्मलेश्याके हैं।

६. शुक्ललेश्या—पक्षपात न करे, निदान न बाँधे, सबमें समानता की दृष्टि रक्खे, इष्टराग अनिष्टद्वेष न करे, ये लक्षण शुक्ललेश्याके हैं।

भव्यत्व-मार्गणा

जिन जीवोंके अनन्तचतुष्टयरूप सिद्धि व्यक्त होनेकी योग्यता हो वे भव्य हैं। उनके भावको भव्यत्व कहते हैं इसकी मार्गणा ३ हैं:—

(१) भव्यत्व (२) अभव्यत्व (३) अनुभय (न भव्यत्व न अभव्यत्व)

उक्त योग्यताके अभाव को अभव्यत्व कहते हैं।

सिद्धजीव न भव्य हैं और न अभव्य हैं।

सम्यक्त्व-मार्गणा

मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत तत्त्वोंके यथार्थ श्रद्धानको सम्यक्त्व कहते हैं इसकी मार्गणा ६ हैं:—

१. औपशमिक सम्यक्त्व, २. क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्व ३. क्षायिक सम्यक्त्व, ४. मिथ्यात्व, ५. सासादनसम्यक्त्व, ६. सम्यग्मिथ्यात्व

१ औपशमिक सम्यक्त्व—अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, और सम्यक्प्रकृति इन ७ प्रकृतियोंके उपशमसे जो सम्यक्त्व होता है उसे औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं। इसके दो भेद हैं—

१. प्रथमोपशमसम्यक्त्व, २. द्वितीयोपशमसम्यक्त्व।

मिथ्यात्वके अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कहते हैं। अनादि मिथ्यादृष्टि व मिश्रप्रकृति सम्यकप्रकृतिकी उद्वेलना कर चुकने वाले जीवोंके अनन्तानुबन्धी ४ व मिथ्यात्व इन पांचके उपशम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है और ७ की सत्ता वालोंके ७ प्रकृतियों के उपशमसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं और यह भी ७ प्रकृतियोंके उपशमसे होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती जीव यदि उपशम श्रेणी चढ़े तब उसके क्षायिक सम्यक्त्व या औपशमिक सम्यक्त्व होना आवश्यक है। वहां यदि उपशम सम्यक्त्व करे तब वह द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहलाता है। द्वितीयोपशम-सम्यक्त्वमें मरण हो सकता है। यदि मरण हो तो देवगतिमें ही जावेगा। प्रथमोपशमसम्यक्त्वमें मरण नहीं होता।

२. क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्व—अनन्तानुबन्धी ४ व मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व इन ६ प्रकृतियोंके उदयाभावी क्षय व उपशमसे तथा सम्यक् प्रकृतिके उदयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायोपशमिक सम्यक्त्वक हते है इस सम्यक्त्वमें सम्यक्प्रकृतिके उदयके कारण सम्यग्दर्शनमें चल मलिन व अगाढ़ (जो कि सूक्ष्म दोष हैं) दोष लगते हैं।

३. क्षायिक सम्यक्त्व—अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन सात प्रकृतियोंके क्षयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायिक सम्यक्त्व कहते हैं।

४. मिथ्यात्व—मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे तत्त्वोंके अश्रद्धानरूप विपरीत अभिप्रायको मिथ्यात्व कहते हैं।

५. सासादन सम्यक्त्व—सम्यक्त्वकी विराधना होनेपर यदि मिथ्यात्वका उदय न आय तो मिथ्यात्वका उदय न आने तक अनन्तानुबन्धी कषाय के उदयसे होनेवाला विपरीत आशय सासादन सम्यक्त्व कहलाता है।

६. सम्यग्मिथ्यात्व—सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे जो मिश्र परिणाम होता है, जिसे न तो सम्यक्त्व रूप ही कह सकते हैं और न मिथ्यात्वरूप ही कह सकते हैं, किन्तु जो आशय कुछ समीचीन व कुछ असमीचीन है उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

संज्ञीमार्गणा

जो संज्ञ अर्थात् मनसहित हैं उन्हें संज्ञी कहते हैं,इसकी मार्गणा ३ हैं १. संज्ञी, २. असज्ञी, ३. अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी)

१. संज्ञी—सैनी याने मनसहित पचेन्द्रिय ही संज्ञी होते हैं। ये चारों गतियोंमें पाये जाते हैं।

२. असंज्ञी—एकेन्द्रियसे लेकर असैनी पचेन्द्रिय तक जीव असंज्ञी होते हैं, ये सब तिर्यञ्च हैं।

३. अनुभय—सयोगकेवली, अयोगकेवली व सिद्ध भगवान अनुभय हैं. ये न संज्ञी हैं, क्योंकि इनके भावमन नहीं और न असंज्ञी हैं, क्योंकि अविवेक नहीं। सयोग केवलीके यद्यपि द्रव्यमन है, परन्तु भावमन नहीं है।

आहारक-मार्गणा

शरीर,मन, वचनके योग्य वर्गणावोंका ग्रहण करना आहार कहलाता है जो इन वर्गणावोंको ग्रहण करे वह आहारक है।

जब कोई जीव मरकर दूसरी गतिमें जाता है तब जन्मस्थान पर पहुचते ही आहारक हो जाता है, इससे पहिले जीव अनाहारक रहता है, किन्तु ऋजुगतिसे जानेवाला यह अनाहारक नहीं होता, क्योंकि वह एक समयमें ही जन्मस्थानपर पहुच जाता है। तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव जब केवलि-समुद्घात करते हैं, प्रतरके दो समय, लोकपूरणका एक समय, इन तीन समयोंमें अनाहारक होते हैं, शेष समय आहारक होते हैं। अयोग

केवली और सिद्ध भगवान अनाहारक ही होते हैं।

उपयोग

बाह्य तथा आभ्यन्तर कारणोंके द्वारा होने वाली आत्माके चेतना गुणकी परिणतिको उपयोग कहते हैं। उपयोग २ हैं :— १ साकारोपयोग, २ निराकारोपयोग। साकारोपयोग ज्ञानोपयोगको कहते हैं। निराकारोपयोग—दर्शनोपयोगको कहते हैं। दोनों ही उपयोग सभी जीवोंके होते हैं, किन्तु छद्मस्थके क्रमशः होते हैं केवली के युगपत् होते हैं।

ध्यान

एक विषय में चिन्तवनके रुकनेको ध्यान कहते हैं, ध्यान १६ प्रकार का है—आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्म्यध्यान ४, शुक्लध्यान ४।

आर्तध्यान ४—(१) इष्टवियोगज (२) अनिष्टसंयोगज (३) वेदनाप्रभव (४) निदान।

रौद्रध्यान ४—(१) हिंसानन्द (२) मृषानन्द (३) चौर्यानन्द (४) परिग्रहानन्द।

धर्म्यध्यान ४—(१) आज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) सस्थानविचय।

शुक्लध्यान ४—(१) पृथक्त्ववितर्कवीचार (२) एकत्ववितर्कअवीचार (३) सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती (४) व्युपरतक्रियानिवृत्ति।

१. इष्टवियोगज आर्तध्यान—इष्ट पदार्थके वियोग होनेपर उसके संयोगके लिए चिन्तवन करना इष्टवियोगज आर्तध्यान है।

२. अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान—अनिष्ट पदार्थके संयोग होनेपर उस के वियोगके लिए चिन्तवन करना अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान है।

३. वेदनाप्रभव आर्तध्यान—शारीरिक पीड़ा होनेपर उसके सम्बन्धमें चिन्तवन करना वेदनाप्रभव आर्तध्यान है।

४. निदान—भोग विषयोंकी चाह सम्बन्धी चिन्तवनको निदान नामक आर्तध्यान कहते हैं। आर्तध्यानमें दुःखरूप परिणाम रहता है।

आर्ति=दुःख उसमें होने वालेको आर्त कहते हैं।

२. हिंसानन्द रौद्रध्यान—कृत कारित आदि हिंसामें आनन्द मानना व हिंसाके लिए चिन्तवन करना हिंसानन्द रौद्रध्यान है।

६. मृषानन्द झूठमें आनन्द मानना व झूठके लिए चिन्तवन करना सो मृषानन्द रौद्रध्यान है।

७. चौर्यानन्द—चोरीमें आनन्द मानना व चोरीके लिए चिन्तवन करना सो चौर्यानन्द रौद्रध्यान है।

८. परिग्रहानन्द—परिग्रहमें आनन्द मानना व परिग्रह याने विषय की रक्षाके लिए चिन्तवन करना परिग्रहानन्द रौद्रध्यान है।

रुद्र=क्रूर, उसके भावको रौद्र कहते हैं।

९. आज्ञाविचय—आगमकी आज्ञाकी श्रद्धासे तत्त्व विषयक चिन्तवन करना आज्ञाविचय धर्म्यध्यान है।

१०. अपायविचय-अपने या परके रागादि भाव जो दुःखके मूल हैं उनके विनाश होनेका चिन्तवन करना अपायविचय धर्म्यध्यान है।

११. विपाकविचय—कर्मोंके फलके सम्बन्धमें संवेगवर्द्धक चिन्तवन करना विपाकविचय धर्म्य ध्यान है।

१२. संस्थानविचव—लोकके आकार काल आदि के आश्रय जीवके परिभ्रमणादिविषयक असारताका चिन्तवन करना व अरहन्त, सिद्ध मन्त्र पद आदि के आश्रयसे तत्त्वचिन्तवन करना सो संस्थानविचय धर्म्यध्यान है

१३ पृथक्त्ववितर्कवीचार—अर्थ, योग, व शब्दोंके परिवर्तन सहित श्रुतके चिन्तवनको पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

१४. एकत्ववितर्क अवीचार—एकही अर्थमें एक ही योगसे उन्हीं शब्दोंमें श्रुतके चिन्तवनको एकत्ववितर्क अवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

१५. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती—सयोगकेवलीके अन्तिम अन्तमुंहूर्तमें जब कि बादर योग भी नष्ट हो जाता है तब सूक्ष्म काययोगसे भी दूर होनेके लिए जो योग उपयोगकी स्थिरता है उसे सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति शुक्लध्यान

कहते है ।

१६. व्युपरतक्रियानिवृत्ति—समस्त योग नष्ट हो चुकनेपर अयोग केवली के यह व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान होता है ।

आस्रव

कर्मोंके आनेके कारणभूत भावको आस्रव कहते हैं । इसके ५७ भेद हैं :—

मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, योग १५ ।

मिथ्यात्व ५

एकान्तमिथ्यात्व, विपरीतमिथ्यात्व, संशयमिथ्यात्व, विनयमिथ्यात्व, अज्ञानमिथ्यात्व ।

१. एकान्तमिथ्यात्व—अनन्तधर्मात्मक वस्तु होनेपर भी उसमें एक धर्मकी ही श्रद्धा करना एकान्तमिथ्यात्व है ।

२. विपरीत मिथ्यात्व—वस्तुके स्वरूपसे विपरीत स्वरूपकी श्रद्धा करना विपरीत मिथ्यात्व है ।

३. संशयमिथ्यात्व—वस्तुके स्वरूपमें संशय करना संशयमिथ्यात्व है

४. विनय (वैनयिक) मिथ्यात्व—देव कुदेव में, तत्त्व अतत्त्व में, शास्त्र कुशास्त्र में, गुरु कुगुरु में, सभीको भला मानकर विनय करना विनयमिथ्यात्व है ।

५. अज्ञानमिथ्यात्व—हित अहित का विवेक न रखना अज्ञान मिथ्यात्व है ।

समस्त संकटोंका मूल कारण मिथ्यात्व भाव है ।

अविरति १२

काय–अविरति ६, विषय–अविरति ६ ।

काय–अविरति—पृथ्वीकायिक-अविरति, जलकायिक-अविरति, अग्नि कायिक-अविरति, वायुकायिक-अविरति, बनस्पतिकायिक-अविरति, त्रस-कायिक-अविरति ।

विषय-अविरति ६—स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति, रसनेन्द्रियविषय-अविरति, घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति, चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति, श्रोत्रेन्द्रिय-विषय-अविरति, मनोविषय-अविरति।

१. पृथ्वीकायिक-अविरति—पृथ्वीकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको पृथ्वीकायिक-अविरति कहते हैं।

२. जलकायिक-अविरति—जलकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको जलकायिक-अविरति कहते हैं।

३. अग्निकायिक-अविरति—अग्निकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको अग्निकायिक-अविरति कहते हैं।

४. वायुकायिक-अविरति—वायुकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको वायुकायिक-अविरति कहते हैं।

५ वनस्पतिकायिक-अविरति—वनस्पतिकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको वायुकायिक-अविरति कहते हैं।

६. त्रसकायिक-अविरति—त्रसकायिक (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रय, पंचेन्द्रिय) जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको त्रसकायिक-अविरति कहते हैं।

७. स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति–स्पर्शन इन्द्रियके विषयोंसे विरक्त न होनेको स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

८. रसनेन्द्रियविषय-अविरति—रसना इन्द्रियके विषय (स्वाद) से विरक्त न होनेको रसनेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

९. घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति—घ्राण इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

१०. चक्षुरिन्द्रयविषय-अविरति—चक्षु इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको चक्षुरिन्द्रयविषय-अविरति कहते हैं।

११. श्रोत्रेन्द्रियविषय-अविरति—श्रोत्र इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होने को श्रोवेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

१२. मनोविषय-अविरति—मनके विषयसे (सन्मान आरामकी चाह

आदिसे) विरक्त न होनेको मनोविषय-अविरति कहते हैं।

कषाय २५

इनका वर्णन कषायमार्गणामें हो चुका है।

योग १५

इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है।

भाव

भाव—अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके उपशम आदि होनेपर जो गुण (स्वभाव या विभाव रूप) प्रगट हो उन्हें भाव कहते हैं। इनका उपादान कारण जीव है अर्थात् ये जीवमें ही होते हैं अन्य द्रव्यमें नहीं होते, इस लिये ये जीवके निज तत्त्व कहलाते हैं।

ये भाव ५३ होते हैं :—

औपशमिक २, क्षायिक ९. क्षायोपशमिक १८, औदयिक २१ और पारिणामिक ३।

औपशमिक भाव

अपने प्रतीपक्षी कर्मोंके उपशम होनेपर जो गुण (भाव) प्रकट हों उन्हें औपशमिक भाव कहते हैं।

औपशमिक भावके दो भेद हैं —१. औपशमिक सम्यक्त्व, २. औपशमिक चारित्र।

१ औपशमिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका है।

२. औपशमिक चारित्र चारित्र मोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशमसे जो चारित्र होता है उसे औपशमिक चारित्र कहते हैं।

क्षायिक भाव

अपने प्रतीपक्षी कर्मोंके क्षयसे जो गुण प्रकट हों उन्हें क्षायिक भाव कहते हैं।

क्षायिक भावके ९ भेद हैं–१. क्षायिकज्ञान (केवलज्ञान), २. क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन) ३. क्षायिक दान, ४. क्षायिक लाभ ५. क्षायिक भोग,

६. क्षायिक उपभोग, ७. क्षायिक वीर्य, ८. क्षायिक सम्यक्त्व, ९. क्षायिक चारित्र।

१ क्षायिक ज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके क्षयसे जो ज्ञान प्रकट हो उसे क्षायिक ज्ञान (केवल ज्ञान) कहते हैं।

२. क्षायिक दर्शन—दर्शनावरण कर्म के क्षय से जो दर्शन प्रगट हो उसे क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन) कहते हैं।

३. क्षायिक दान—दानान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रकट हो उसे क्षायिक दान कहते है।

४ क्षायिक लाभ—लाभान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रकट हो उसे क्षायिक लाभ कहते हैं।

५. क्षायिक भोग-भोगान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक भोग कहते हैं।

६. क्षायिक उपभोग—उपभोगान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक उपभोग कहते हैं।

७. क्षायिक वीर्य—वीर्यान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक वीर्य कहते हैं।

८. क्षायिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका है।

९. क्षायिक चारित्र—चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके क्षय से जो चारित्र हो उसे क्षायिक चारित्र कहते हैं।

क्षायोपशमिक भाव

अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके स्पर्द्धकोंके उदयाभावी क्षयसे किन्हीं स्पर्द्धकोंको उपशमसे व किन्हीं स्पर्द्धकोंके उदयसे जो भाव प्रकट हों उन्हें क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।

क्षायोपशमिक भावके १८ भेद हैं—ज्ञान ४ (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान) अज्ञान ३ (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि), दर्शन ३ (चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन) लब्धि ५ (क्षायोपशमिक दान, लाभ

भोग, उपभोग, वीर्य) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम ।

(१—४) ज्ञान ४—इनका वर्णन हो चुका ।

(५—७) अज्ञान ३—इनका वर्णन हो चुका ।

(८-१०) दर्शन ५—इनका वर्णन भी हो चुका ।

(११-१५) लब्धि ५—दानान्तराय आदिके क्षयोपशमसे क्षायोपशमिक दान आदि होते हैं ।

१६ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका ।

क्षायोपशमिक चारित्र—अप्रत्याख्यानावरण ४ व प्रत्याख्यानावरण ४ इन आठ प्रकृतियोंके क्षयोपशममें महाव्रतादिरूप चारित्र होता है उसे क्षायो-पशमिक चारित्र कहते हैं ।

१८ संयमासंयम—इसका वर्णन हो चुका ।

औदयिक भाव

अपनी उत्पत्तिके निमित्तभूत कर्मोंके उदयसे जो भाव प्रकट हों उन्हें औदयिक भाव कहते हैं । इनके २१ भेद हैं—

(१-४) गति ४—नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव । (इनका वर्णन गति-मार्गणामें हो चुका है) ।

(५-८) कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ (इनका वर्णन वेद-मार्गणा में हो चुका है) ।

(९-११) लिंग ३—पुंवेद, स्त्रीवेद नपुंसकवेद (इनका वर्णन कषाय-मार्गणामें हो चुका है) ।

१२ मिथ्यादर्शन—(इसका स्वरूप सम्यक्त्वमार्गणामें बताया है) ।

१३. अज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके उदयसे जो ज्ञानका अभाव रूप भाव है उसे अज्ञान भाव कहते हैं, यह अज्ञान औदयिक है ।

१४. असंयम—(इसका वर्णन संयममार्गणामें हो चुका है) ।

१५. असिद्ध—जबतक आठों कर्मोंका अभाव नहीं होता तब तक

असिद्ध भाव है।

(१६-२१) लेश्या ६-कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल। (इन का वर्णन लेश्यामार्गणामें हो चुका)।

पारिणमिक भाव

पारिणामिकभाव—जो कर्मोंके उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशमकी अपेक्षाके बिना होवे वह पारिणामिक भाव है।

पारिणामिक भावके ३ भेद हैं :—

१. जीवत्व, २ भव्यत्व, ३. अभव्यत्व।

१ जीवत्व – जिससे जीवे वह जीवत्व है। वह दो प्रकार का है—

पहिला ज्ञानदर्शनरूप और दूसरा दसप्राणरूप। इनमें ज्ञानदर्शनरूप जीवत्व शुद्धपारिणामिक भाव है। प्राणरूप जीवत्व अशुद्ध पारिणामिक भाव है।

२–३. भव्यत्व अभव्यत्व (इनका वर्णन भव्यत्वमार्गणामें किया है)।

अवगाहना

जिन जीवोंके देह है उनके देह प्रमाण तथा देहरहित (सिद्ध) जीवोंके जितने शरीरसे मोक्ष गये हैं उतने प्रमाण अवगाहनाका वर्णन करना इस स्थानका प्रयोजन है।

जाति

उत्पत्तिस्थानको योनि या जाति कहते हैं। जाति ८४ लाख हैं।

ये सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त, शीत, उष्ण, शीतोष्ण, संवृत, विवृत, संवृतविवृत, इन ९ भेदोंके प्रभेदोंसे ८४ लाख हो जाते हैं।

किन जीवोंकी कितनी जाति हैं :—

नित्य निगोदकी	७ लाख
इतरनिगोदकी	७ लाख
पृथ्वीकायिककी	७ लाख
जलकायिककी	७ लाख

अग्निकायिककी	७ लाख
वायु कायिककी	७ लाख
वनस्पतिकायिककी	१० लाख
द्वीन्द्रियकी	२ लाख
त्रीन्द्रियकी	२ लाख
चतुरिन्द्रियकी	२ लाख
तिर्यञ्च पंचेन्द्रियकी	४ लाख
देवकी	४ लाख
नारककी	४ लाख
मनुष्यकी	१४ लाख
	८४ लाख हैं

कुछ और स्पष्टीकरण—तिर्यञ्चकी ६२ लाख, एकेन्द्रियकी ५२ लाख, त्रसकी ३२ लाख, पंचेन्द्रियकी २६ लाख, विकलत्रयकी ६ लाख, जोड़ करने पर होती हैं। इसी प्रकार अन्यके भी लगाना चाहिये।

कुल

शरीरके भेदके कारणभूत नोकर्म वर्गणावोंके भेदको कुल कहते हैं। सब कुल १९७॥ लाख कोटि (१९ नील ७५ खरब) होते हैं वे इस प्रकार हैं :—

पृथ्वीकायिक	२२ लाख कोटि
जलकायिक	७ लाख कोटि
अग्निकायिक	३ लाख कोटि
वायुकायिक	७ लाख कोटि
वनस्पतिकायिक	२८ लाख कोटि
द्वीन्द्रिय	७ लाख कोटि
त्रीन्द्रिय	८ लाख कोटि
चतुरिन्द्रिय	९ लाख कोटि

जलचर	१२॥ लाख कोटि
थलचर (पशु)	१० लाख कोटि
नभचर (पक्षी)	१२ लाख कोटि
छाती के सहारे चलने वाले तिर्यञ्च	
दुमही आदि	९ लाख कोटि
देव	२६ लाख कोटि
नारकी	२५ लाख कोटि
मनुष्य	१२ लाख कोटि
	१९७॥लाखकोटि

अंकों में कुलों का वर्णन

पृथ्वीकायिक	२२०००,००,००,००,०००
जलकायिक	७०००,००,००,००,०००
अग्निकायिक	३०००,००,००,००,०००
वायुकायिक	७०००,००,००,००,०००
वनस्पतिकायिक	२८०००,००,००,००,०००
द्वीन्द्रिय	७०००,००,००,००,०००
त्रीन्द्रिय	८०००,००,००,००,०००
चतुरिन्द्रिय	९०००,००,००,००,०००
जलचर	१२५००,००,००,००,०००
थलचर	१००००,००,००,००,०००
नभचर	१२०००,००,००,००,०००
छाती के सहारे चलने वाले	
उरुप–रिसर्पादि	९०००,००,००,००,०००
देव	२६०००,००,००,००,०००
नारक	२५०००,००,००,००,०००

मनुष्य १२०००,००,००,००,०००

१९७५००,००,००,००,०००

कुछ और स्पष्टीकरण–तिर्यञ्च १३४।। लाख कोटि,एकेन्द्रिय ६७ लाख कोटि, पंचेन्द्रियतिर्यञ्च ४३।। लाख कोटि, पंचेन्द्रिय १०६।। लाख कोटि, विकलत्रय २४ लाख कोटि, जोड़ करनेपर होते हैं, इसी तरह अन्य लगा लेना चाहिये।

प्रकरणके योग्य संक्षिप्त नयविवरण—

नय—ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं।

अध्यात्मज्ञानके प्रयोजक नयके प्रकार–नय ४ प्रकारके हैं–१. व्यवहार नय, २. अशुद्धनिश्चय नय, ३. शुद्धनिश्चय नय, ४. परमशुद्धनिश्चय नय।

१. व्यवहारनय–दो या अनेक द्रव्योंके सम्बन्धसे होने वाली व्यञ्जन पर्याय देखना, अन्यके निमित्तसे होने वाली नैमित्तिक पर्याय देखना व्यवहार नय है। जैसे कर्मके उदय से राग हुआ है, जीव शरीरमें बद्ध है, जीव नारकी है, जीव तिर्यञ्च है आदि अभिप्राय व्यवहार नय है।

२. अशुद्ध निश्चयनय—किसी एक द्रव्यकी विभाव पर्यायको उसी एक द्रव्यमें देखना अशुद्धनिश्चय नय है। जैसे आत्माका राग है, आत्माका विकल्प है आदि।

३. शुद्धनिश्चय नय—किसी एक द्रव्यकी स्वभाव पर्यायको उसी एक द्रव्यमें देखना शुद्ध निश्चय नय है। जैसे जीवका केवल ज्ञान है, जीवका अनन्त सुख है आदि।

४. परम शुद्ध निश्चय नय—पर्यायकी व गुण भेदकी दृष्टि न करके मात्र स्वभाव या अनाद्यानन्त केवल द्रव्यको देखना परम शुद्ध निश्चयनय है। जैसे–आत्मा चैतन्य मात्र है आदि।

विशेष—एक उपाचरनय भी कहलाता है जो एक वस्तुका किसी अत्यन्त भिन्न याने असंयुक्त अन्य वस्तुमें सम्बन्ध मनाता है जैसे कि मकान

मेरा है, पुत्र मेरा है, इत्यादि. किन्तु इसकी चर्चाकी बुद्धिमानों में जरा भी प्रतिष्ठा नहीं है। अतः इस नया-भासके सम्बन्धमें कुछ भी विचार नहीं करना है।

जीवस्थानचर्चाके विषयोंका आध्यात्मिक विवरण

जीवस्थान चर्चामें गुणस्थान आदि जिन जिन विषयोंका वर्णन किया है वे सब पर्यायें हैं। पर्यायें शक्तिकी कहलाती है। ये सब पर्यायें जीव द्रव्य के किन किन गुणोंकी हैं, इसका नक्शा द्वारा विवरण करते हैं-यहाँ समझने की बात यह है कि जैसे द्रव्य अनादिनिधन है वैसे ही गुण भी अनादिनिधन है किन्तु पर्यायें सादि सान्त होती हैं। सन्तान प्रवाहरूपमें भले ही कोई पर्याय अनादि या अनन्त अथवा अनादि अनन्त हो, किन्तु सूक्ष्मतासे वे भी समय समयवर्ती हैं। इसमें सुख गुण व क्रियावती शक्तिकी पर्यायोंका पृथक् वर्णन नहीं है।

गुण	पर्यायें
(सहज) ज्ञान—	ज्ञानमार्गणा सब, संज्ञित्व मार्गणा, ज्ञानोपयोग, क्षायिक-ज्ञान, क्षायोपशमिक ज्ञान ४ अज्ञान ३, औदयिक अज्ञान, केवली।
(सहज) दर्शन—	दर्शनमार्गणा सब, दर्शनोपयोग, क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन), क्षायोपशमिक दर्शन ३।
(सहज) सुख—	साता, असाता, आत्मीय आनन्द।
(सहज) वीर्य—	क्षायोपशमिक लब्धि ५, क्षायिक लब्धि ५।
(सहज) श्रद्धा—	सम्यक्त्व मार्गणा सब, औपशमिक सम्यक्त्व भाव, क्षायिक सम्यक्त्व भाव, वेदक सम्यक्त्व भाव, मिथ्यात्व भाव, मिथ्यात्व गुणस्थान, मिश्र गुणस्थान, अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान।
(सहज) चारित्र-	वेदमार्गणा सब, कषायमार्गणा सब, संयम मार्गणा सब, ध्यान सब, अविरति आस्रव, क्षायिक चारित्र, औपशमिक

चारित्र, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम, कषाय, लिङ्ग, असंयम, संज्ञा ४, अतीतसंज्ञ, सासादन गुणस्थान, ५वें से १४ वें गुणस्थान तक।

प्रदेशवत्त्व— स्वभावव्यञ्जन पर्याय, (गतिरहित, इन्द्रिय रहित, कायरहित, अनाहारक) अतीत जीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण। विभावव्यञ्जन पर्याय (गति ४, इन्द्रियजाति ५, काय ६, अहारक) जीवसमास १४, पर्याप्ति ६, प्राण १०, कुल १९७॥ लाख कोटि, अवगाहना।

योग शक्ति— योगमार्गणा सब, लेश्यामार्गणा सब।

सर्व शक्तियाँ—पारिणामिक भाव, भव्यत्वमार्गणा, असिद्ध, सिद्ध, क्षेत्रान्तरित होना, स्थिर होना।

नोट— (१) जहां विग्रह गति, ऋजु गति, समुद्घात आदिका वर्णन आया है, वहां उन्हे क्रियावती शक्तिकी पर्याय समझना।

(२) पर्यायोंमें जहां आकुलता, अनाकुलताको विकासकी प्रमुखता से विचारें तो वहां सुख गुणकी पर्यायें समझना। योनि व कुलको पुद्गल की पर्यायें जानना।

कषायोंको विशेषरूपसे जाननेके लिये इस नक्शेका आश्रय लेवें—

नाम व भेद		सामान्यालाप
कषाय	१६	
हास्यादि	४	
वेद	३	
भय	१	
जुगुप्सा	१	
जोड़	२५	

आस्रवोंको विशेषरूपसे समझनेके लिये इस नक्शेका आश्रय लेवें :—

नाम व भेद		सामान्यालाप
मिथ्यात्व	५	
विषय अविरति	६	
काय अविरति	६	
कषाय	१६	
हास्यादि	४	
वेद	३	
भय	१	
जुगुप्सा	१	
योग	१५	
जोड़	५७	

भावोंको विशेषरूपसे जाननेके लिये इस नक्शेका आश्रय लेवें—

नाम व भेद		सामान्यालाप
औपशमिक	२	
क्षायिक	९	
क्षायो० ज्ञान	४	
अज्ञान	३	
दर्शन	३	
योग	२१	

नाम व भेद		सामान्यालाप
पिछला योग	२१	
लब्धि	५	
वेदक सम्यक्त्व	१	
सरागचारित्र	१	
संयमासंयम	१	
औदयिक गति	४	
कषाय	४	
लिङ्ग	३	
मिथ्यात्व	१	
अज्ञान	१	
असंयम	१	
असिद्ध	१	
लेश्या	६	
पारिणामिक	३	
कुल जोड़	५३	

जीवस्थानोंको घटित करने के लिये कुछ ज्ञातव्य

१—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और नारकी तथा सब प्रकार के लब्ध्यपर्याप्तक ये सब जीव नियमसे नपुंसक ही होते हैं।

२—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय व

नारकी जीव इन सब जीवोंके ३ अशुभ (कृष्ण, नील, कापोत) लेश्यायें ही होती हैं।

३—औदारिक शरीर—मनुष्य और तिर्यञ्चोंके ही होता है। तथा वैक्रियक शरीर देव और नारकियोंके ही होता है।

४—तिर्यञ्च गतिमें क्षायिक–सम्यग्दृष्टि जीव भोग–भूमिज तिर्यञ्चोंमें ही मिलेंगे और वहाँ भी वे तिर्यञ्च क्षायिक–सम्यग्दृष्टि हैं जिन्होंने पहिलेके मनुष्य भवमें क्षायिक–सम्यक्त्व उत्पन्न किया और उससे पहिले तिर्यञ्च आयुका बन्ध किया हो।

५—जो मनुष्य क्षायिक–सम्यक्त्व उत्पन्न करनेसे पहिले नरक आयुका बन्ध करले, वह क्षायिक–सम्यक्त्व सहित पहिले नरकमें उत्पन्न होता है।

६—देव गतिमें नपुंसक वेद नहीं होता।

७—देव गतिमें पर्याप्तके तो ३ शुभ लेश्या होती हैं और अपर्याप्तके भी ३ शुभ लेश्या होती हैं, किन्तु छोटे देवोंमें (भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषीमें) अपर्याप्तके ३ अशुभ लेश्या भी हो सकती हैं, इस कारण देवगतिके सामान्य आलापमें ६ लेश्यायें कही गई हैं।

८—देव गतिमें क्षायिक–सम्यक्त्व उत्पन्न नहीं होता। क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर देव बनता है तो वह भी वहां क्षायिक-सम्यग्दृष्टि है।

९—एकेन्द्रिय पर्याप्तमें पहिला गुणस्थान होता है। कोई पचेन्द्रिय जीव दूसरे गुणस्थानमें मरकर एकेन्द्रियमें उत्पन्न हो तो उसके अपर्याप्ति–अवस्थामें दूसरा गुणस्थान रह सकता है। इस कारण एकेन्द्रियके सामान्य आलापमें २ गुणस्थान बताये हैं। इसी तरह द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय में भी जानना।

१०—कुअवधिज्ञान, चारों मनोयोग, सत्य वचनयोग, असत्यवचनयोग और

उभयवचनयोग संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके ही हो सकता है।

११—सासादन गुणस्थानमें मरकर जीव—नरकगतिमें; सूक्ष्म एकेन्द्रियमें; अग्निकायमें और वायुकायमें उत्पन्न नहीं होता।

१२—तीसरे गुणस्थानमें मरण नहीं होता। इस कारण इसमें मिश्रकाय-योग व कार्माण काययोग नहीं होता तथा इसी कारण इस मिश्रगुण-स्थान में अपर्याप्त अवस्था भी नहीं होती।

१३—क्षायोपशमिक-सम्यग्दृष्टि जीव श्रेणीपर नहीं चढ़ता है। श्रेणीपर चढ़नेके लिए उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व उत्पन्न करना होगा या क्षायिकसम्यक्त्व उत्पन्न करना होगा।

१४—क्षायिक-सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणी व क्षपक श्रेणी दोनोंमें किसी पर चढ़ सकता है किन्तु द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीव केवल उपशम श्रेणीपर ही चढ़ सकता है।

१५—अपर्याप्त अवस्थामें—मनोबल; वचनबल; श्वासोच्छ्वास; मनोयोग; वचनयोग; औदारिक काययोग; वैक्रियक काययोग; आहारक काययोग, कुअवधिज्ञान; मन:पर्यय ज्ञान; परिहार – विशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, संयमासंयम और मिश्र गुणस्थान नहीं होते।

१६—अनुभय वचनयोग पर्याप्त द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय के भी होता है।

१७—प्रथमोपशम-सम्यक्त्वमें तो मरण नहीं होता और द्वितीयोपशम-सम्यक्त्वमें मरण हो तो देव गतिमें उत्पन्न होता है। इस कारण वैक्रियक मिश्र काययोगमें तो उपशम सम्यक्त्व (द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व) हो सकता है। किन्तु, औदारिक मिश्रकाय योगमें उपशम सम्यक्त्व नहीं हो सकता।

१८—आहारक-काययोग-युगल, वेदद्विक (नपुंकस और स्त्री वेद) मन:पर्यय ज्ञान, परिहारविशुद्धि, उपशम सम्यक्त्व इनमें से अगर कोई

एक हो तो बाकीके चार नहीं होते, किन्तु द्वितीयोपशम–सम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान हो सकता है और उपशम सम्यक्त्वके साथ वेद-युगल (नपुंसक वेद व स्त्रीवेद) भी हो सकता है।

१९—कार्माण काय योगमें तथा अयोगमें अनाहारक ही होता है।

२०—सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती शुक्ल ध्यान १३वें गुणस्थानके अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में ही होता है जब कि बादरकाययोग का भी निरोध हो चुकता है, इससे पहिले नहीं।

उपशम श्रेणी— के गुणस्थान

११. उपशान्तमोह चारित्रमोहकी समस्त प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता है।

१०. सूक्ष्मसाम्पराय चारित्रमोहकी प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता है।

९. अनिवृत्तिकरण चारित्रमोहनीयकी प्रकृतियोंके उपशमन के निमित्त से होता है।

८. अपूर्वकरण चारित्रमोहनीयके उपशमनके परिणामके निमित्तसे होता है।

क्षपक श्रेणी— के गुणस्थान

१४ अयोगकेवली योगके अभावके निमित्तसे होता है।

१३. सयोगकेवली घातिया कर्मोंके क्षय हो जाने पर योगके सद्भावके निमित्त से होता है।

१२ चारित्रमोहकी समस्त प्रकृतियों के क्षयके निमित्तसे होता है।

१०. चारित्रमोहकी प्रकृतियोंके क्षय के निमित्तसे होता है।

९. चारित्रमोहनीयकी प्रकृतियोंके क्षपणके निमित्तसे होता है।

८. चारित्रमोहनीयके क्षपणके परिणामके निमित्तसे होता है।

—गुणस्थानोंके निमित्तोंका विवरण—

७—संज्वलनके मन्द उदय सहित प्रत्याख्यानावरणके क्षयोपशमके निमित्त से होता है।

६—प्रत्याख्यानावरणनामक चारित्रमोहके क्षयोपशमके निमितसे होता है।

५—अप्रत्याख्यानावरणनामक चारित्रमोहके क्षयोपशमके निमितसे होता है।

४—दर्शनमोहके उपशम, क्षयोपशम, या क्षयके निमित्तसे होता है।

३—सम्यग्मिथ्यात्वनामक दर्शनमोहके उदयके निमित्तसे होता है।

२—दर्शनमोहकी अपेक्षा पारिणामिकताके निमित्तसे होता है।

१—मिथ्यात्व नामक दर्शन मोहके उदयके निमित्तसे होता है।

लघु जीवस्थानचर्चा (छब्बीसठाणा) की संदृष्टियोंके आद्य ज्ञातव्य

१–इसके नक्शोंमें शीर्षक वाले स्थानके आधारमें २६ स्थानोंको घटित करना चाहिये।

२–इन नक्शोंमें केवल सामान्यालापका वर्णन है, सो उस स्थानमें अधिकसे अधिक जो हो उसका निरूपण किया गया हैं।

३–प्रवाचनामें या नक्शोंमें जहाँ जहाँ पहिली व बादकी संख्याके बीच डेस (—) का चिन्ह लगा हो वहाँ पहिली व बादकी तथा बीचकी संख्यावों के तत्त्व सब यथासम्भव लगाना चाहिये।

४–जहां अल्पविराम (,) लगाकर संख्यायें लिखी हैं वहाँ वे ही लेना चाहिये बीच की संख्या नहीं लेना।

५–नक्शोंमें अर्द्धविराम (;) लगाकर जहां अनेक संख्या लिखी हों उनको भिन्न–भिन्न अपेक्षासे घटित करना चाहिये।

जीवस्थानोंकी प्रवाचना

नोट—इन स्थानोंके नामके ऊपर जो अङ्क लिखे हैं, उस स्थानमें कितने गुण स्थान हैं इसके सूचक हैं। ◡ इस निशानका अर्थ सिद्ध जानना।

गुण-स्थान १४

१. मिथ्यात्व, २. सासादन सम्यक्त्व, ३. मिश्र सम्यक्त्व (सम्यग्मिथ्यात्व), ४ अविरत-सम्यक्त्व, ५ देशविरत, ६ प्रमत्तविरत, ७. अप्रमत्तविरत, ८. अपूर्वकरण, ९ अनिवृत्तिकरण, १० सूक्ष्मसाम्पराय, ११. उपशान्तमोह, १२. क्षीणमोह १३. सयोगकेवली, १४. अयोगकेवली।

जीव-समास १४

(गुणस्थान १) (१-२)

१. बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, २ बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, ३ सूक्ष्म-

(१) (१) [१]

एकेन्द्रिय पर्याप्त, ४ सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त, ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त,

[१-२] [१] [१-२]

६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त, ८ त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, ९. चतु-

[१] [१-२] [१]

रिन्द्रिय पर्याप्त, १०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, ११. असञ्ज्ञी-पचेन्द्रिय-पर्याप्त,

[१-२] (१-१४)

१२. असञ्ज्ञी-पचेन्द्रिप-अपर्याप्त, १३. संज्ञी-पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४. संज्ञी-

[१,२,४,६,१३]

पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त।

पर्याप्ति ६

१. आहारपर्याप्ति २. शरीर-पर्याप्ति, ३. इन्द्रिय-पर्याप्ति, ४. श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति, ५. भाषा-पर्याप्ति, ६. मनःपर्याप्ति।

प्राण १०

[१-१२] [१-१२] [१-१२] [१-१२]
१ स्पर्शनेन्द्रिय, २. रसनेन्द्रिय, ३. घ्राणेन्द्रिय, ४. चक्षुरिन्द्रिय,
[१-१२] [१-१२] [१-१३] [१-१३] [१-१४]
५. कर्णेन्द्रिय, ६ मनोबल, ७ बचनबल, ८. कायवल, ६ आयु, और
[१-१३]
१० श्वासोच्छ्वास ।

संज्ञा ४

[१ ६] [१-८] [१-६] [१-१०]
१. आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३. मैथुनसंज्ञा, ४. परिग्रहसंज्ञा ।

गति ४, गति-मार्गणा ५

[१-४] [१-५] [१-१४] [१-४]
१. नरकगति, २ तिर्यञ्चगति, ३ मनुष्यगति, ४. देवगति,
[० (सिद्ध)]
५. गतिरहित (सिद्ध-गति) ।

इन्द्रिय जाति ५, इन्द्रिय-जाति-मार्गणा ६

[१-२] [१-२] [१-२] [१-२]
१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय, ५ पञ्चे-
[१-१४] [० (सिद्ध)]
न्द्रिय, ६. इन्द्रियरहित (सिद्ध)

काय ६, काय मार्गणा ७

[१-२] [१-२] [१] [१]
१. पृथ्वीकाय, २. जलकाय, ३. अग्निकाय, ४ वायुकाय, ५. वन-
[१-२] [१-१४] [० (सिद्ध)]
स्पति काय, ६ त्रसकाय, ७. कायरहित ।

योग १५, योग-मार्गणा १६

[१-१३] [१-१२] [१-१२] [१-१३]
१. सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. भयमनोयोग, ४. अनुभय-
[१-१३] [१-१२] [१-१२]
मनोयोग, ५. सत्यबचनयोग, ६ असत्यबचनयोग, ७. उभयबचनयोग,
[१-१३] [१-१३] [१, २, ४, १३]
८. अनुभयबचनयोग, ९ औदारिककाययोग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग,
[१-४] [१, २, ४] [६]
११. वैक्रियककाययोग, १२. वैक्रयिकमिश्रकाययोग, १३. आहारक काय-
[६] [१, २, ४, १३]
योग १४. आहारकमिश्रकाययोग, १५. कार्माणकाययोग और १६. योग-
[१४ और ०]
रहित ।

वेद ३, वेद मार्गणा ४

[१-९] [१-९] [१-९] [९-१४, ०]
१. पुरुषवेद, २. स्त्रीवेद, ३. नपुंसकवेद, ४. अपगतवेद ।

कषाय २५, कषाय-मार्गणा २६

←————[१-२]————→
१-४ अनंतानुबन्धी-क्रोध, मान, माया, लोभ ।

[१-४] अथवा [२-४]
५-८. अप्रत्याख्यानावरण-क्रोध, मान, माया, लोभ ।

[१-४] अथवा [५]
९-१२ प्रत्याख्यानावरण—क्रोध, मान, माया, लोभ ।

[१-१०] व [६-९] [६-१०]
१३-१६—संज्वलन-क्रोध, मान, माया, लोभ ।

←——————[१–८]——————→

१७ हास्य, १८. रति, १९ अरति. २०. शोक, २१ भय.

[१-८] [१-६] [१-६] [१-६]

२२. जुगुप्सा, २३. पुरुषवेद, २४. स्त्रीवेद, २५. नपुंसक वेद,

[११-१४ और ○]

२६. कषायरहित ।

ज्ञान ५, ज्ञान-मार्गणा ८

[४-११] [४-१२] [४-१२] [६-१२]

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४ मन:पर्ययज्ञान,

[१३, १४ और ○] [१-३] [१-३] [१-३]

५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुतज्ञान, ८. कुअवधिज्ञान ।

संयम ५, संयम-मार्गणा ८

[६-६] [६-६] [६-७]

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहार विशुद्धि, ४. सूक्ष्म-

[१०] [११-१४] [१-४] [५]

साम्पराय, ५. यथाख्यातचारित्र, ६. असंयम, ७. संयमासंयम, ८. असंयम,

[○ सिद्ध]

सँयम, सँयमासंयम इन तीनों से रहित ।

दर्शन ४, दर्शन-मार्गणा ४

[१-१२] [१-१२] [४-१२] [१३, १४, ○]

१. चक्षुर्दर्शन, २. अचक्षुर्दशन, ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन ।

लेश्या ६, लेश्या-मार्गणा ७

[१-४] [१-४] [१-४] [१-७]

१. कृष्णलेश्या, २. नीललेश्या, ३. कापोतलेश्या, ४. पीत-लेश्या,

[१-७] [१-१३] [१४ और ○]

५. पद्मलेश्या, ६. शुक्ललेश्या, ७. लेश्यारहित ।

भव्यत्व-मार्गणा ३

[१-१४] [१] [०]
१. भव्य, २. अभव्य, ३. अनुभय।

सम्यक्त्व ३, सम्यक्त्व-मार्गणा ६

[४-११] [४-७] [४, १४ और ०]
१. औपशमिक, २. क्षायोपशमिक (वेदक), ३. क्षायिक-सम्यक्त्व,

[१] [२] [३]
४. मिथ्यात्व, ५. सासादन, मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व)।

संज्ञी-मार्गणा ३

[१-१२] [१-२] [१३, १४ और ०]
१. संज्ञी, २. असंज्ञी, ३. अनुभय। (न संज्ञी और न असंज्ञी)।

आहारक-मार्गणा २

[१-१३] [१,२,४,१३,१४ और ०]
१. आहारक, २. अनाहारक।

उपयोग २

[१-१२] [१३, १४ और ०]
१. ज्ञानोपयोग, २. दर्शनोपयोग। (a) क्रमशः (b) युगपत्।

ध्यान १६

(a) आर्तध्यान ४, (b) रौद्रध्यान ४, (c) धर्म्यध्यान ४, (d) शुक्लध्यान ४।

[१-६] [१-६]
(a) आर्तध्यान ४—१. इष्टवियोगज, २. अनिष्टसंयोगज, ३. वेदना-

[१-६] [१-५]
प्रभव, ४. निदान।

[१-५] [१-५] [१-५]

(b) **रौद्र ध्यान** ४—५. हिंसानन्द, ६. मृषानन्द, ७. चौर्यानन्द, ८.

[१-५]

विषयसंरक्षणानन्द ।

[४-७] [४-७]

(c) **धर्म-ध्यान** ४—९. आज्ञाविचय, १०. अपायविचय, ११. विपाक-

मुख्यतया [५-७] [४-७] मुख्यतया [६-७]

विचय, १२. संस्थानविचय ।

[८-११½] [१२]

(d) **शुक्लध्यान** ४–१३. पृथक्त्ववितर्कवीचार, १४. एकत्ववितर्क-अवी-

[१३]

चार, १५. सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती, १६. व्युपरत

[१४]

क्रिया निवृत्ति ।

आस्रव ५७

(१) मिथ्यात्व ५, (२) अविरति १२, (३) कषाय २५, (४) योग १५ ।

[१] [१]

(१) **मिथ्यात्व** ५—(१) एकान्तमिथ्यात्व, (२) विपरीत मिथ्यात्व,

[१] [१]

(३) संशय मिथ्यात्व, (४) विनय मिथ्यात्व, (५)

[१]

अज्ञानमिथ्यात्व ।

(२) **अविरति १२**—(a) काय-अविरति—६ (b) विषय-अविरति–६ ।

[१-५] [१-५]

(३) **कायअविरति** ६-(६) पृथ्वीकाय-अविरति, (७) जलकाय-अविरति,

[१-५] [१-५]

(८) अग्निकाय-अविरति, (९) वायुकाय-अविरति,

[१-५] [१-४]
(१०) बनस्पतिकाय-अविरति, (११) त्रसकाय-अविरति।

[१-५]
(d) **विषयअविरति ६**—(१२) स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति, (१३) रस-
[१-५] [१-५]
नेन्द्रियविषय — अविरति, (१४) घ्राणेन्द्रिय
[१-५]
विषय-अविरति, (१५) चक्षुरिन्द्रिय विषय-अविरति
[१-५]
(१६)कर्णेन्द्रिय विषय-अविरति, (१७) मनोविषय-
[१-५]
अविरति।

(३) **कषाय २५**—इनका वर्णन कषायमार्गणा में हो चुका है।

(४) **योग १५**—इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है।

भाव ५३

(a) औपशमिक—२ (b) क्षायिक—९, (c) क्षायोपशमिक —१८, (d) औदयिक–२१, (e) पारिणामिक—३।

[४-११] [८-११]
(a) **औपशमिक भाव २**—(१) औपशमिक सम्यक्त्व, (२) औपशमिक चारित्र।

[१३,१४, और सिद्ध] [१३,१४ और सिद्ध]
(d) **क्षायिक भाव ९**—(३) क्षायिक ज्ञान, (४) क्षायिक दर्शन (५)
[१३, १४] [१३, १४] [१३-१४]
क्षायिकदान, (६) क्षायिक लाभ, (७) क्षायिक
[१३-१४] [१३,१४,सिद्ध]
भोग, (८) क्षायिक उपभोग, (९) क्षायिकवीर्य,

[४-१४, सिद्ध] [८-१०,१२-१४, ०]
(१०) क्षायिक सम्यक्त्व, (११) क्षायिक चारित्र ।

[४-१२] [४-१२]
(b) क्षायोपशमिक भाव १८—(१२) ज्ञान–४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान,

[४-१२] [६-१२]
अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान ।

[१-३] [१-३] [१-३]
(१६-१८)—अज्ञान ३— कुमति, कुश्रुत, कुअवधि ।

[१-१२] [१-१२] [४-१२]
(१९-२१)—दर्शन ३—चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन ।

————[१-१२]———
(२२-२६)—लब्धि ५–क्षायोपशमिक-दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य ।

[४-७] [६-७] [५]
(२७) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, (२८) क्षायोपशमिकचारित्र (२९) संयमा-संयम ।

[१-४] [१-५]
(d) औदयिक भाव २१–गति ४ (३०) नरक, (३१) तिर्यञ्च, (३२)

[१-१४] [१-४]
मनुष्य, (३३) देव ।

[१-९] [१-९[[१-९] [१-१०]
कषाय ४ (३४) क्रोध, (३५) मान, (३६) माया, (३७) लोभ ।

[१-९] [१-९] [१-९]
लिङ्ग ३ (३८) पुरुषवेद, (३९) स्त्रीवेद, (४०) नपुंसकवेद ।

[१] [१-१२] [१-४] [१-१४]
(४१) मिथ्यादर्शन,(४२) अज्ञान, ४६-असंयम, ४४-असिद्धत्व ।

[१-४] [१-४] [१-४] [१-७] [१-७]
लेश्या ६–(४५) कृष्ण, ४७–नील, ४७–कापोत, ४८–पीत, ४९–पद्म,
[१-१३]
५०–शुक्ल।

[१,१४, ०] [१-१४]
( ) पारिणामिक-भाव ३—(५१) जीवत्व, (५२) भव्यत्व, (५३)
[१]
अभव्यत्व ।

२४—अवगाहना

गनाङ्गुलके असख्यातवें भागसे लेकर १००० योजन तक।

२५ जाति

जाति ८४ लाख।

२६—कुल

२६ कुल १९७॥ लाख कोटि।

जीवस्थानचर्चा के विषयों का नक्शों द्वारा विवरण प्रारम्भ

(नोट :—जिसमें जिस स्थानके गुणस्थान नम्बर नहीं मिलते हैं वे स्थान उसमें नहीं होते यह अबाधित है, किन्तु जिसमें जिस स्थान के गुणस्थान नम्बर मिल जाते हैं वे उसमें हो भी सकते, नहीं भी हो सकते। यह निर्णय करने के लिये पहिले जो १८ नियम दिये गये हैं उनसे सहायता लेना चाहिये)

मिथ्यात्व गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गतिरहित विना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	अतीन्द्रिय विना
कायमार्गणा	६	अकाय विना
योगमार्गणा	१३	म० ४व० ४औ० २का० वै०२
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुत कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	५	क्रमशः:
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र ४
आश्रव	५५	आहारक काय योग २ बिना
भाव	३४	क्षायोपश. १०, औद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घना० असं-भागसे १००० योजन तक
योनि	—	८४ लाख
कुल	—	१९७।। लाख कोटि

सासादन गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सासादन सम्यक्त्व
जीवसमास	७	सं० प० प १ अपर्याप्त ६
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	४	जल, पृथ्वी, वनस्पति, त्रसकाय,
योगमार्गणा	१३	मन ४व० ४औ० २वै० २ का० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुत कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र ४
आश्रव	५०	मिथ्यात्व ५ व अहारकयोग २ बिना
भाव	३३	क्षायो १०, औद २० पारि० २
अवगाहना		घना० अस० भाग से १००० योजन
योनि		५६ लाख
कुल		१८७॥ लाख कोटि

सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र) गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व)
जीवसमास	१	सं० पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१०	म० ४व० ४ औ १ वै १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२१	अकषाय व अनन्तानुबंधी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति, कुश्रुत, कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र)
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८ या ९	आर्त ४रौ० ४,फलरूप में धर्म०१
आस्रव	४३	योग १० कषाय २१ अविरति १२
भाव	३२	क्षायो: १०, औद० २० पारि० २
अवगाहना		संख्यात घनांगुल से १०००योजनतक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अविरत सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं पचेन्द्रिय प०, सं पं अ०,
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	म० ४ व ४ औ २ वै २ का १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसक वेद
कषायमार्गणा	२१	अकषाय, अनन्तानुबंधी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुत, अवधि ज्ञान
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक,क्षायोपं,क्षायिकसम्यक्त्व,
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२, १०	आर्त४रौ०४धर्म४,(मुख्यतया ध०२)
आश्रव	४६	अविरति १२, कषाय २१, योग १३
भाव	३६	औ.१ क्षा.१ क्षायो.१२,औ.२० पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

देशविरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देश विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्य, तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	म० ४ व० ४ औदारिककाय योग १
वेदमार्गणा	३	पु. स्त्री. नपुंसक
कषायमार्गणा	१७	प्र. ४, सं ४ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुत, अवधि
संयममार्गणा	१	संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म शुक्ल
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम, क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, ११	आर्त ४ रौ४धर्म ४[मुख्यतया धर्म ३]
आश्रव	३७	योग ९ कषाय १७ अवरति ११
भाव	३१	औ.१क्षा.१क्षायो. १३औद.१४पारि.२
अवगाहना	—	सं० घनां से ५२५ धनुषतक
योनि	—	१८ लाख [मनुष्य १४ पशु ४]
कुल	—	५५ लाख कोटि [मनुष्य १२ पशु ४३]

प्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	प्रमत्त विरण
जीवसमास	२	सं० पंचेन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म० ४ व० ४ औद० १ आहारक २
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	१३	संज्वलन ४ हास्य आदि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	३	सामा०, छेदो०, परिहार विशुद्धि,
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक,क्षायोप.,क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	२४	योग ११ कषाय १३
भाव	३१	औ.१ क्षा.१ क्षायो.१४ औद.१३ पा.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुषतक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोडि

अप्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अप्रमत्त विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	३	आहार संज्ञा बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	म० ४ वच० ४ औदा० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	१३	संज्वलन ४, हास्य आदि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	३	सामा० छेदो० परिहारविशुद्धि
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत पद्म, शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायोप. क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	४	धर्म ४
आश्रव	२२	योग ९, कषाय १३
भाव	३१	औ. १ क्षा. १ क्षायो. १४ औद. १३ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अपूर्वकरण गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अपूर्वकरण
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	३	आहार संज्ञा बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	म० ४ व० ४ औ० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुसंकवेद
कषायमार्गणा	१३	सज्वलन ४ हास्य आदि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	२	सामायिक छेदोपस्थापना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्व वितर्क विचार (शुक्ल)
आश्रव	२२	योग ९ कषाय १३
भाव	२९	औ.२ क्षा.२ क्षायो.१२ औद.११पा.२
अवगाहना	२८	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अनिवृत्तिकरण
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	२	मैथुन संज्ञा परिग्रह संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन ४ व. ४ औ. १
वेदमार्गणा	२	सब
कषायमार्गणा	७	संज्वलन ४ पु० स्त्री० नपुंसकवेद
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	२	सामायिक छेदोपस्थापना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिकसम्यक्त्व,
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार (शुक्लध्यान)
आश्रव	१६	योग ९ कषाय ७
भाव	२९	औ.२क्षा.२क्षायो. १२औद.११पारि.२
अवगाहना	—	३।। हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सूक्ष्मसाम्पराय
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	परिग्रह सज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन ४ व० ४ औदरिककाय योग १
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	संज्वलन लोभ
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	१	सूक्ष्म साम्पराय
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार (शुक्लध्यान)
आश्रव	१०	योग ९ कषाय १
भाव	२३	औ.२ क्षा.२क्षायो.१२ औद.५पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

उपशांतमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	उपशांतमोह
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	६	म० ४, व० ४, औदारिककाययोग १
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववित्तर्क वीचार शुक्ल ध्यान
आश्रव	६	योग ६
भाव	२१	औ.२क्षा.१क्षायो.१२ औद.४ पारि.२
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

क्षीणमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	क्षीणमोह
जीवसमास	१	सं० पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	—	अपगत (अतीत)
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन० ४,व० ४, औदारिककाय योग १
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	४	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	२	पहिले पृथक्त्व वितर्कवीचार बाद में एकत्ववितर्क अवीचार
आश्रव	९	योग के ९
भाव	२०	क्षा. २ क्षायो. १२ औद. ४ पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुषतक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

सयोग-केवली गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सयोगकेवली
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	४	वचनवल,कायवल,आयु,स्वासोछ्वास,
संज्ञा	×	अपगत (अतीत)
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	७	मन २, वच० २, औ० २,कार्माण१
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवलज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
सज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	१	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान
आश्रव	७	योग ७
भाव	१४	क्षायिक ९, औद. ३ पारिणा. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अयोग-केवली गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अयोगकेवली
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१	आयु
संज्ञा	×	अपगत संज्ञा (अतीत)
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	१	व्युपरत क्रिया निवृति (शुक्लध्यान)
आश्रव	+	आश्रव से अतीत
भाव	१३	क्षा. ९ औद. २ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अतीत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	कायरहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	+	ध्यान रहित
आश्रव	+	आश्रवरहित
भाव	५	क्षायिक ४, जीवत्व १
अवगाहना	+	३।। हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

नरकगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि०, सा०, मिश्र, अविरत सम्यक्त्व
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	नरक गति
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म० ५, व० ४, वै० २, का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय व केवलज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण, नील, कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, १०	आर्त४, रौद्र४ धर्म४(मुख्यता में धर्म.२)
आश्रव	५१	मि. ५ अवि. १२ कषाय २३, योग११
भाव	३३	औ.१ क्षा.१ क्षायो.१५औद.१३पारि.३
अवगाहना		७धनुष ३हाथ ६अंगुल से५००धनुषतक
योनि		४ लाख
कुल		२५ लाख कोटि

तिर्यंचगति में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	मिथ्यात्व, सा०, मिश्र, अवि० देश०
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	११	मन ४ व० ४ औ० २ का० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय केवल-ज्ञान बिना
संयममार्गणा	२	असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२, ११	आर्त४ रौद्र४ धर्म४(मुख्यता में धर्म.३)
आश्रव	५३	मि. ५ अवि. १२ कषाय २५, योग११
भाव	३९	औ.१ क्षा.१ क्षायो१६ औद.१८पारि.३
अवगाहना		घना. केअसं. भागसे१००० योजनतक
योनि		६२ लाख
कुल		१३४।। लाख कोटि

मनुष्यगति में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१४	मन ४ वचन ४ औ. २ आहा. २ का. १ व अयोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी व अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५५	मि. ५ अवि. १२ कषाय २५, योग १३
भाव	५०	औ० गति ३ बिना
अवगाहना		सं.म. घनां.-सं. प.म.३ कोश तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

देवगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि० सा० मिश्र अ० सम्यक्त्व
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म० ४ व० ४ वै० २ का० १
वेदमार्गणा	२	पु०, स्त्री०
कषायमार्गणा	२४	नपुंसक व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, १०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म४(मुख्यतामेंध.२)
आश्रव	५२	मि ५ अवि. १२,कषाय २४योग११
भाव	३७	औ.१क्षा.१क्षायो.१५औद.१७पारि.३
अवगाहना		१ हाथ से १५ धनुष तक
योनि		४ लाख
कुल		२६ लाख कोटि

गतिरहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	कायरहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवलज्ञान
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	+	ध्यानातीत
आश्रव	+	आश्रवरहित
भाव	५	क्षा. ४,(ज्ञा.द.स. वीर्य)पा. १जीवत्व
अवगाहना	+	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

एकेन्द्रियजाति में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्व,सासादन(सा.अपर्याप्त में)
जीवसमास	४	वादरएकेंद्रिय प०अ०सू० प०अ०
पर्याप्ति	४	आहा. शरीर, इन्द्रिय. स्वासोछ्वास
प्राण	४	स्पर्शनेन्द्रिय,कायवल,स्वासोच्छ्वासआयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	५	त्रसकाय बिना
योगमार्गणा	३	औदारिक के २ कर्माण १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्रीवेद, पुंवेद, अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति, कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण, नील, कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि०, सा., (अपर्याप्त में सासादन)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कमशः
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनां.असं. भाग से १००० योजनतक
योनि		५२ लाख
कुल		६७ लाख कोटि

द्वीन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०(सासादन अपर्याप्त में ही)
जीवसमास	२	द्वीन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	५	मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	६	स्पर्शन, रसना, काय.वचन.श्वा. आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	द्वीन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचनयोग, १ औ ,२ का. १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्रीवेद, पुंवेद अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मिथ्यात्व सासादन (अपर्याप्त में)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४०	मि. ५ अवि. ८ कषाय २३ योग ४
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनाङ्गुलसंख्यातभागसे १२योजनतक
योनि	—	२ लाख
कुल	—	७ लाख कोटि

त्रीन्द्रिय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्व सासादन अपर्याप्ति में ही
जीवसमास	२	त्रीन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	५	मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	७	चक्षु, कर्ण, मनबल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	त्रीन्द्रियजाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचनयोग १ औ० २ का०१
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	सासादन (सा. अपर्याप्ति में ही)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४१	मि ५ अवि. ९ कषाय २३ योग ४
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घना. सं. भाग से ३ कोश तक
योनि		२ लाख
कुल		७ लाख कोटि .

चतुरिन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि. सासादन (सा. अपर्याप्त में ही)
जीवसमास	२	चतुरिन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	५	मनबिना
प्राण	८	कर्ण मनो बल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	चतुरन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचन औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्णनील कापोत
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४२	मि. ५ अवि. १० कषाय २३ योग४
भाव	२५	क्षायो. ९ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घना. सं. से १ योजन तक
योनि		२ लाख
कुल		९ लाख कोटि

असंज्ञी पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्वसासादन(सा.अपर्याप्तमेंही)
जीवसमास	२	असंज्ञी पंचेन्द्रिय प०, अपर्याप्त
पर्याप्ति	५	मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	९	मनोबल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रियजाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचनयोग १ औ० २ का०१
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि. सासादन (सा. अपर्याप्ति में ही)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४५	मि. ५ अवि. ११ कषाय २५ योग ४
भाव	२५	क्षायो. ९ औदयिक१३ पारिणामिक३
अवगाहना	—	घना. सं. से १००० योजन सेकम तक
योनि		
कुल		

संज्ञी पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	सयोग केवली अयोग केवली बिना
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय प. व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	अयोग बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१४	सूक्ष्मक्रिय. व्युपातक्रिय. बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	औ.२क्षा.२क्षायो.१८औद.२१पारि.३
अवगाहना		सं. घना. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	४	संज्ञी पंचेन्द्रिय व संज्ञी पं. के २-२
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
सञ्ज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१६	सब
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
सञ्ज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी, अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		घनां. सं. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

इंन्द्रिय रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभव
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	०	ध्यानातीत
आश्रव	०	आश्रवरहित
भाव	५	क्षायिक ४, पारिणामिक १ जीवत्व
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		अतीत
कुल		अतीत

पृथ्वी कायिक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि. सा. (सासादन अपर्याप्त में ही)
जीवसमास	४	एकेंद्रिय संबंधी ४
पर्याप्ति	४	भाषा पर्याप्त व मन:पर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन,कायवल,श्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	पृथ्वीकाय
योगमार्गणा	३	औदारिककाययोग१औ.मि.१कार्माण१
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति, कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मिथ्यात्व, सासादन, अपर्याप्त
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुल असं. भाग
योनि		७ लाख
कुल		२२ लाख कोटि

जलकाय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्व सासादन अपर्याप्ति
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म प० अप०
पर्याप्ति	४	भाषा व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, कायबल, श्वासो० आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	जल काय
योगमार्गणा	३	औदा. २ कार्माणकाय योग १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्रीवेद, पुंवेद व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सासादन (सा. अपर्याप्ति)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगु. असं. भाग
योनि		४ लाख
कुल		७ लाख कोटि

अग्निकायिक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व गुणस्थान
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय बा० प० अ०,सू० प० अ०
पर्याप्ति	४	भाषा व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, काय, श्वासोच्छ्वास, आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	अग्निकाय
योगमार्गणा	३	औ. २ कार्माणकाय योग १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री. पु. व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना		घनां. असं. भाग
योनि		७ लाख
कुल		३ लाख कोटि

वायुकाय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय वादर सू०के प०अ०अप०
पर्याप्ति	४	भाषा व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, काय, श्वासोच्छ्वास, आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इंद्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	वायुकाय
योगमार्गणा	३	औदा० २ कार्माणकाय योग १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री, पु० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनां. असं. भाग
योनि		७ लाख
कुल		७ लाख कोटि

त्रस कायिक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	१०	एकेन्द्रिय के ४ बिना
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमार्गणा	४	एकेन्द्रिय व गति रहित बिना
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१६	सब
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी असंज्ञी अनुभय
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		घनांगुल सं. भा. से १००० योजन
योनि		३२ लाख
कुल		१०३॥ लाख कोटि

काय रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	०	अतीत
जीवसमास	०	अतीत
पर्याप्ति	०	अतीत
प्राण	०	अतीत
संज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	०	अतीत
आश्रव	०	आश्रवरहित (अतीत)
भाव	५	क्षायिक ४, पारिणा. १
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

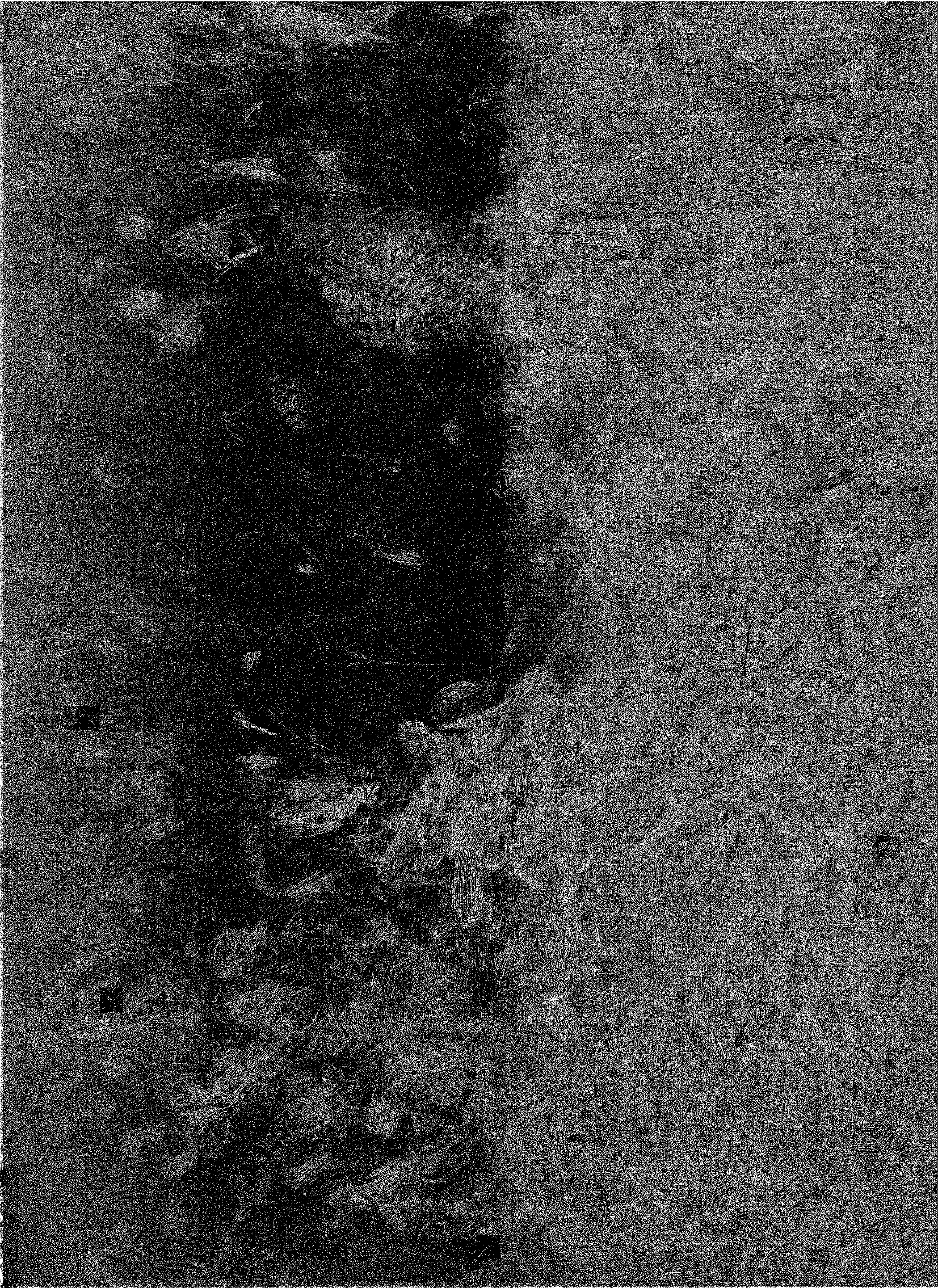

सत्य बचनयोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	अयोग केवली बिना
जीवसमास	१	सांज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	चार व अतीत
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	सत्य वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, अनुभय
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	१५	व्युपरत क्रिया निवृत्ति बिना
आश्रव	४३	मि. ५ अवि. १२ कषाय २५ योग १
भाव	५३	सब
अवगाहना	—	घनांगु. सं. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

असत्य बचनयोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	सयोग केवली अयोग केवली बिना
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	असत्य वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	आर्त ४ रौद्र ४, ध. ४, शु. २।
आश्रव	४३	योग के १४ बिना
भाव	४६	औ.२क्षा.२क्षायो.१८औद.२१पारि.३
अवगाहना	—	अंगुल सं. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

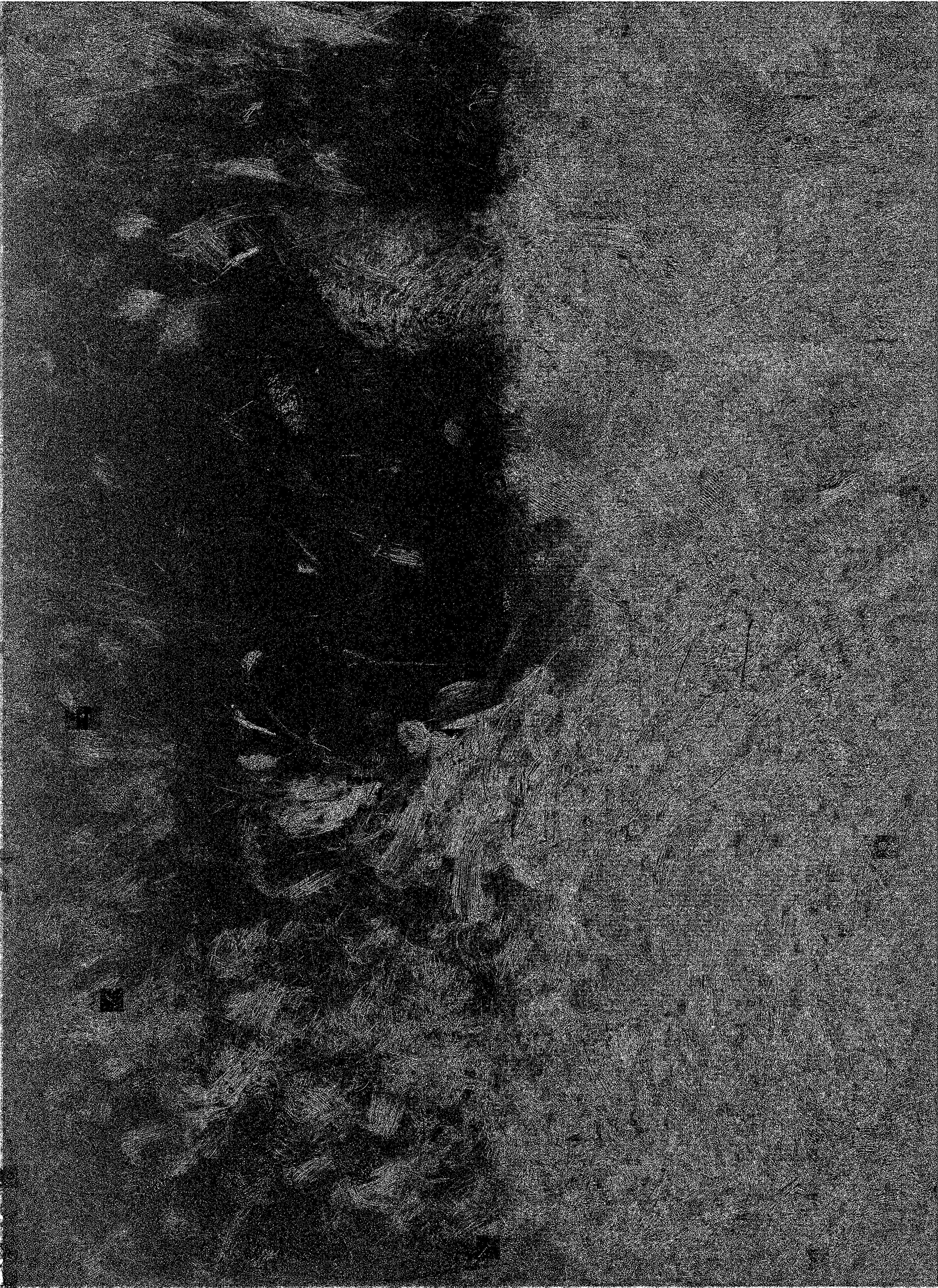

औदारिक काययोग

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	अयोग केवली बिना
जीवसमास	७	पर्याप्त के
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	२	तिर्यंच मनुष्य गति
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय जाति रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१	औदारिक काययोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	१५	आ. ४, रौ. ४, धर्म ४, शुक्ल ३
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	५१	नरक देव गति बिना
अवगाहना	—	घनांगुलकेअसं.वेभागसे१०००योजनतक
योनि		७६ लाख
कुल		१४६।। लाख कोटि

औदारिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि. सा. अवरति सयोग केवली
जीवसमास	७	सिर्फ अपर्याप्त अवस्था
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	७	मन वच. श्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य तिर्यंच गति
इन्द्रियजातिमा०	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१	औदारिक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय कुअवधि बिना
संयममार्गणा	२	असंयम यथाख्यात चरित्र
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	४	उपशम मिश्र बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१२, १०	आर्त ४, रौद्र ४ धर्म ४ (मुख्यतया २)
आश्रव	४३	१४ योग बिना
भाव	४५	क्षायिक९ क्षायो. १४ औद. १९ पारि.३
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवें भाग १००० योजन से कम
योनि		७६ लाख
कुल		१४६॥ लाख कोटि

वैक्रयिक काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि. सा. मि. अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	१	संज्ञी पं. प.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	नरक, देव गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	वैक्रयिक काय योग
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	२५	कषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय व केवल बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	३९	औ.१क्षा.१ क्षायो.१५औद.१९ पारि.३
अवगाहना	—	१ हाथ से ५०० धनुष तक
योनि		८ लाख
कुल		५९ लाख कोडि

वैक्रयिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मि. सा. अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	१	सं. पं. अपर्या.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	७	मन:वचन श्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	नरक देव गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	वैक्रयिक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	५	मति, श्रुत, अवधि, कुमति, कुश्रुत
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यग्ज्ञ मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	३८	औ.१क्षा.१क्षायो.१४ औद.१२ पारि.३
अवगाहना	—	कुछकम १ हाथसे कुछकम ५०० धनुषतक
योनि		८ लाख
कुल		५१ लाख कोटि

आहारक काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मत्त विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पं. प.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	संज्ञा रहित बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	आहारक काय योग
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	११	सं० ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुति, अवधि
संयममार्गणा	२	सामा० छेदो
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	१२	योग १, कषाय ११
भाव	२८	क्षा.१ क्षायो. १३ औद. १२ पारि.२
अवगाहना	—	मु.३॥ हाथसे५२५ ध.वआहा.१ हाथ
योनि	+	१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

आहारक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	मत्त विरत
जीवसमास	१	स. पं. अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	अपर्याप्ति अवस्था
प्राण	७	मन, वचन श्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	आहारक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	११	सज्वलन ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुति अव.
संयममार्गणा	२	सा. छेदो.
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अविध दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३, धर्म ४
आश्रव	१२	योग १, कषाय ११
भाव	२८	क्षा. १ क्षायो. १३ औद. १२ पारि.२
अवगाहना	—	मु.३॥हाथ से ५२५ध.व आहा.१हाथसे कम
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

कार्माण काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	१, २, ४, १३।
जीवसमास	७	अपर्याप्त के
पर्याप्ति	६	अपर्याप्त
प्राण	७	मन वचन श्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१	कार्माण काययोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय कुअधि ज्ञान बिना
संयममार्गणा	२	असंयम यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	४	सब
लेश्या मा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यग्मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश: व युगपत्
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २ शुक्ल १
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	४८	उप.१ क्षायोप४(मन:कुअ. संज्ञ.संयमा) बिना
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवे भागसे १००० योजन तक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

योग रहित में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	१४ व अतीत
जीवसमास	१	अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१	आयु व अतीत
संज्ञा	—	अतीत संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य व गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	त्रस व काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात चा० तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	१	व्युपरत क्रिया निवृत्ति व रहित
आश्रव	—	अतीत आश्रव
भाव	१३	क्षायि. ९ औदा. २ पारिणा. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

पुरुषवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	(१-९)
जीवसमास	४	पंचेन्द्रिय संबंधी ४
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	नरक गति बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सूक्ष्म, यथा० बिना
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल के अन्तिम ३ बिना
आश्रव	५५	स्त्री नपुं० वेद बिना
भाव	४३	औ.२ क्षा.२ क्षायो.१८औद.१८पारि.३
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से ३ कोश तक
योनि		२२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

स्त्रीवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	(१-९)
जीवसमास	४	असंज्ञी संज्ञी पं. प.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब अतीत बिना
गतिमार्गणा	३	नरक, गति बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ योग रहित बिना
वेदमार्गणा	१	स्त्रीवेद
कषायमार्गणा	२३	पु० न० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय, केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	४	सामा. छेदो. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१३	शुक्ल ध्यान ३ बिना
आश्रव	५३	आहारक २ पु. १ न १ बिना
भाव	४२	क्षा. ७ क्षायो. १ औद . ३ बिना
अवगाहना		सं. घनां. से ३ कोश तक
योनि		२२ लाख
कुल		१८॥ लाख कोटि

नपुंसकवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	(१-९)
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब।
गतिमार्गणा	३	नरक तिर्यंच व मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ व योग रहित बिना
वेदमार्गणा	१	नपुंसक वेद
कषायमार्गणा	२३	पु. स्त्री. अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय व केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	४	सामा. छेदो. असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१३	शुक्ल ३ बिना
आश्रव	५३	मि.५अविरति१२ कषाय २३योग १३
भाव	४२	औ.२क्षा.२क्षायो.१७ औद.१८ पारि.३
अवगाहना	—	अंगुलके असं.भागसे १०००योजन तक
योनि		८० लाख
कुल		१७१॥ लाख कोटि

अपगतवेद में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	९ से १४ तक व अतीत
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब
संज्ञा	२	परिग्रह संज्ञा व अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य गति व गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	त्रसकाय व काय रहित
योगमार्गणा	१२	आहारक २ वं २ बिना
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	४	संज्वलन ४ अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा. छेदो.सूक्ष्म,यथा,व तीनोंसे रहित
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	२	शुक्ललेया व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	२	औपषमिक व क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	४०	शुक्ल ४ व रहित
आश्रव	१५	योग ११ कषाय ४ व आश्रवरहित
भाव	३३	औ.२क्षा.९ क्षायो.१२ औद.८ पारि..२
अवगाहना		३॥ हाथसे५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

अनन्तानुबंधी क्रोध में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि. सा.
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति व रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा।	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	स्त्री पु० नं०
कषायमार्गणा	१३	अनंतान आदि ४ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	३	कु० कु० कु०
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५५	आहारककाय योग व मिश्रइन२ बिना
भाव	३४	क्षायो. १० औद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घांनगुल के असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानावरण क्रोध में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहितबिना
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	क्रोध ३ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	औ.१क्षा. १क्षायो. १५औद.२०पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से१०००योजन तक
योनि		३२ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानावरण मान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	मान ३ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	औ १क्षा.१क्षायो. १५औद. २०पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १०००योजन तक
योनि		३२ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानावरण माया में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	माया ३ हा ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्या मा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
सञ्ज्ञित्वमा०	१	सांज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	औ.१क्षा.१क्षायो. १५औद.२० पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १००० योजन तक
योनि		३२ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानावरण लोभ में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	लोभ ३ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	औ.१क्षा.१क्षायो. १५औद. २०पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १०००योजन तक
योनि		३२ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी व अप्रत्याख्यानावरण से रहित क्रोध में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देशविरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व तिर्यंचगति
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन ४, वच० ४, औ० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री न०
कषायमार्गणा	११	क्रोध २ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	३	मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान
संयममार्गणा	१	संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ३
आश्रव	३७	योग ९ कषाय १७ अविरति ११
भाव	३१	औ १क्षा. १क्षायो. १३औद. १४पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
योनि		१८ लाख
कुल		५५॥ लाख कोटि

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरणरहित संज्वलनक्रोध में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ से ९ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म. ४ व. ४ औ. १ आहारक २
वेदमार्गणा	४	स्त्री. पु. नं. अपगत
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन क्रोध १ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अव. मन.
संयममार्गणा	३	सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ.२ क्षा.२ क्षायो.१४ औद.८ पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण रहित संज्वलनमानमें

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ से ९ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म. ४ व. ४ औ. १ आहारक २
वेदमार्गणा	४	स्त्री. पु. नं. अपगत
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन मान १ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अव. मन.
संयममार्गणा	३	सामायिक छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ.२क्षा.२क्षायो. १४औद.८ पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरणरहित संज्वलनमायामें

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ से ९ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म. ४ व. ४ औ. १ आहारक २
वेदमार्गणा	४	स्त्री० पु० नं० अपगत
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन माया १ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अव. मन.
संयममार्गणा	३	सामायिक छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ.२ क्षा.२ क्षायो.१४ औद.८ पारि.२
अवगाहना	—	३।। हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण से रहित संज्वलन लोभ में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	६ से १० गुणस्थान
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	मन. ४ वचन ४ औ. १ आहा. २
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन लोभ १ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अव० मन० पर्ययज्ञान
संयममार्गणा	४	सामा. छेदोप.परिहार सूक्ष्मसापराय
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म० ४ पृथक्त्व० १
आश्रव	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ.२क्षा.२ क्षायो.१४ औद.८ पारि.२
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

हास्यरति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	१ से ८ गुणस्थान तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२३	कषाय १६ हा०र०भ०जु० वेद ३
ज्ञानमार्गणा	७	केवल-ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा. छेदो.परि.असंयम,संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आ० ४, रौ० ४ धर्म ४, शुक्ल १
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	औ.२क्षा.२क्षायो.१८ औद.२१ पारि.३
अवगाहना	—	घनांगुलके असं.भागसे १००० योजनतक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

अरति शोक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	१ से ८ गुणस्थान तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	अपगतवेद बिना
कषायमार्गणा	२३	कषाय १६ अ०शो०भ०जु० वेद ३
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा.छेदो.परि. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्यत्व अभव्यत्व
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आ० ४ रौ० ४ धर्म४ शुक्ल १
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	औ.२क्षा.२क्षायो.१८ औद.२१पारि.३
अवगाहना	—	घनां. के अस. भागसे१०००योजनतक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७।। लाख कोटि

भय जुगुप्सा में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	मिथ्यात्व से अपूर्णकरण तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	अपगतवेद बिना
कषायमार्गणा	२५	कषाय रहित बिना सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा.छेदो.परि. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्यत्व अभव्यत्व
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म४ शुक्ल १
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	औ.२क्षा.२क्षायो.१८ औद.२१पारि.३
अवगाहना	—	घनां. के असं. भागसे१०००योजनतक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

अकषाय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	११ से १४ गुणस्थान व अतीत
जीवसमास	२	सं० पं प० अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब व अतीत
संज्ञा	—	संज्ञा रहित (अतीत)
गतिमार्गणा	२	मनुष्य व गतिरहित
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इंद्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व काय रहित
योगमार्गणा	१२	मन४वचन४ औ.२ कार्माण१ व अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान नहीं
संयममार्गणा	२	यथाख्यात चारित्र व तीनों से रहित
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	२	शुक्ल लेश्या व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य व अनुभय
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक व क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी व अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	४	शुक्ल ध्यान ४ व अतीत
आश्रव	११	योग ११ व अतीत
भाव	३०	औ.२क्षा.६ क्षायो.१२औद.५ पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४–लाख व जाति व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व कुल व अतीत

कुमति कुश्रुत ज्ञान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मि० सा० सम्यग्मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक व अयोग बिना
वेदमार्गणा	३	अप्रगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१, ३	कुमति या कुश्रुत (प्रकिय से २ या ३ भाव में भी)
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	३	मि० सासादन सम्यग्मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५५	आहारक २ योग बिना
भाव	३२	क्षायो. ८ औद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुलके असं.भागसे १०००योजनतक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

कुअवधि ज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मिथ्यात्व, सासादन, सम्यग्मिथ्यात्व
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१०	मन ४ वचन ४ औदा. १ वैंक्रियक१
वेदमार्गणा	३	अपगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३, १	कुअवधि(लब्धिसे तीनों कु.भावमेंभी)
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	३	मि. सा. मिश्र
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५२	योग ५ बिना
भाव	३२	क्षायो. ८ औद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १०००योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

मतिज्ञान श्रुतज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	४ से १२ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनंतानुबंधी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१	मतिज्ञान या श्रुतज्ञान (लब्धि से २ या ३या४ भाव में भी)
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक व अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ बिना
भाव	३८	औ.२क्षा.२क्षायो. १२औद.२० पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १०००योजनतक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

अवधिज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	४ से १२
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनंतानुबंधी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१	अवधिज्ञान(लब्धिसे ३या४ भावमें भी)
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	अलेश्य बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायोप-क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	४८	अविरति १२ कषाय २१ योग १५
भाव	३८	औ.२क्षा. २क्षायो. १२औद.२०पारि.२
अवगाहना	+	संख्यात घनांगुल से१००० योजनतक
योनि	+	२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

मनःपर्यय ज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	६ से १२
जीवसमास	१	संज्ञो पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन ४ वच ४ औ १
वेदमार्गणा	२	पुरुषवेद व अपगतवेद
कषायमार्गणा	११	संज्वलन ४ हा. ६ पुरुषवेद १
ज्ञानमार्गणा	१	मन.पर्ययज्ञान (लब्धिसे४ भावमें भी)
संयममार्गणा	४	सामा.छेदो. सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	द्वितीयोपशम. क्षायो१. क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	९	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल २
आश्रव	२०	योग ९ कषाय ११
भाव	२८	औ,२ क्षा.२ क्षायो.११औद.११पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

केवलज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	सयोग केवली, अयोग केवली
जीवसमास	२	सं पं प, अ०, व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	वचनबल, कायबल, श्वा० आयु
संज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व काय रहित
योगमार्गणा	१८	मन२ वचन२ औदा.२ कार्मा. व अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात य तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	२	शुक्ल लेश्या व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	२	अंतिम २ शुक्ल ध्यान व अतीत
आश्रव	७	योग ७ व अतीत
भाव	१४	क्षायिक ९ औदयिक ३ पारिणा. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

सामायिक व छेदोपस्थापना संयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ से ९
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	मन ४ वचन ४ औ १ आहा. २
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	१३	संज्वलन ४ हास्यादि० ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुति अव० मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गणा	२, १	सामायिक, छेदोपस्थापना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ललेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक, क्षायोपशमिक क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १ पृथक्त्ववितर्क.
आश्रव	२४	योग ११ कषाय १३
भाव	३३	औ.२ क्षा.२ क्षायो.१४ औद.१३ पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

परिहारविसुद्धि में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	प्रमत्तविरत अप्रमत्तविरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन ४ वच० ४, औ० १
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	११	सज्वल ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुति अवधिज्ञान
संयममार्गणा	१	परिहार विशुद्धी
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत पद्य शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोपशमिक, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	२०	योग ९ कषाय ११
भाव	२७	क्षा. १ क्षायो. १३ औद.११ पारि.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

सूक्ष्मसाम्पराय संयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सूक्ष्म साम्पराय
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	प्राण
संज्ञा	१	परिग्रह
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन ४ वचन० औ० १
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	संज्वलन सूक्ष्म लोभ
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गणा	१	सूक्ष्म साम्पराय
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक क्षायिक, सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्व वितर्क विचार
आश्रव	१०	योग ९ कषाय १
भाव	२३	औ.२क्षा.२क्षायो.१२औद.५पारि.२
अवगाहना	+	३॥ हाथ से ५२५ धपुष तक
योनि	+	१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

यथाख्यातसंयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	११ से १४ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१२	मन४ वच.४ औदा.२ का. १, अयोग१
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	यथाख्यातसंयम
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	२	शुक्ल लेश्या व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक व क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	४	शुक्ल ४
आश्रव	११	योग ११
भाव	२६	औ.२क्षा.९ क्षायो.१२औद.४ पारि.२
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

असंयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त बिवरण
गुणस्थान	४	मिथ्यात्व,सा.मिश्र,अविरत सम्यक्त्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रियरहित बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय केवलज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२, १०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म४ (मुख्यतया२)
आश्रव	५५	आहारक योग २ बिना
भाव	४१	औ.१क्षा.१क्षायो.१५ औद.२१पारि.३
अवगाहना	—	घनांगुलके असख्यातवें भागसे१००० योजन तक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

संयमासंयम में

स्थान	म.मान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देशविरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व तिर्यंच गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	९	मन० ४ वच० ४ औ० १
वेदमार्गणा	३	स्त्री पु० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	१७	अनंतानुबंधी४ अप्रत्या.४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुत अवधिज्ञान
संयममार्गणा	१	संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षयोप-क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२, ११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म४ (मुख्यतया३)
आश्रव	३७	अविरति ११ कषाय १७ योग ९
भाव	३१	औ.१ क्षा.१ क्षायो.१३ औद.१४पा.२
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
योनि		१८ लाख
कुल		५५॥ लाख कोटि

संयम असंयम संयमासंयम इन तीनों से रहित में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	×	अतीत
जीवसमास	×	अतीत
पर्याप्ति	×	अतीत
प्राण	×	अतीत
संज्ञा	×	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	×	अतीत
आश्रव	×	आश्रव रहित
भाव	५	क्षायिक४ (ज्ञा.द. क्षायिक सं. वीर्य) जीवत्वया १
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

चक्षुर्दर्शन में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२ गुणस्थान तक
जीवसमास	६	चौइन्द्रिय के २ पंचेन्द्रिय के ४
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	२	चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	१	चक्षु दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	४४	औ.२क्षा.२क्षायो. १६औद.२१ पारि.३
अवगाहना		असंख्युगुणित घनांगुल संख्यात भाग से १००० योजन तक
योनि		२८ लाख
कुल		११५॥ लाख कोटि

अचक्षुर्दर्शन में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२ गुणस्थान तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजाति०मार्गणा	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२५	कषाय रहित बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	४४	औ.२क्षा.२क्षायो. १६औद.२१ पारि.३
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

अवधिदर्शन में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	अविरत सम्यक्त्व से क्षीणमोह तक
जीवसमास	२	पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधी ४ अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	१	अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक, क्षायोपशमिक व क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्लध्यान बिना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ बिना
भाव	४१	औ. २क्षा. २क्षायो. १५ औद. २०पारि. २
अवगाहना		संख्यात अंगुल से १०००योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०८॥ लाख कोटि

केवलदर्शन में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	सयोगकेवली, अयोगकेवली व अतीत
जीवसमास	२	संज्ञी पं. पर्याप्त, अपर्याप्त व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	कायबल वचनबल श्वासोच्छ्वास आयु व अतीत
संज्ञा	+	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व अकाय
योगमार्गणा	८	मन२वचन२ औदा.२कार्मा.१व आयोग
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात संयम व तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	२	शुक्ल लेश्या व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	२	अन्तिम शुक्लध्यान २ व अतीत
आश्रव	७	योग ७ व आस्रवातीत
भाव	१४	क्षा. ९ औद. ३ पारि. २
अवगाहना		३।। हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

कृष्ण लेश्या में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मिथ्यात्व से अविरत सम्यक्त्वगुण.तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ व अयोग बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	कषाय रहित बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय व केवलज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	कृष्णलेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२, १०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म४ (मुख्यतया२)
आश्रव	५५	आहारक २ योग बिना
भाव	३६	औ.१क्षा.१ क्षायो.१५ औद.१६ पा.३
अवगाहना	—	घनांगुल के असख्यातवें भागसे १००० योजन तक
योनि		८० लाख
कुल		१७१॥ लाख कोटि

पीतलेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	मिथ्यात्व से अप्रत्यत्तविरत गुण तक
जीवसमास	२	संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	मनुष्यगति व तिर्यंच गति व देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	यथाख्यात व तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	पीत लेश्य
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२	शुक्ल ४ बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	३८	औ.१ क्षा.१ क्षायो.१८औद.१५पारि.३
अवगाहना	—	सं. घनां. से १००० योजन तक
योनि		८२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

पद्मलेश्या में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	१-७
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	मनुष्यगति तिर्यंचगति व देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	यथा० व तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	पद्म, लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	४ शुक्लध्यान बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	३८	औ.१ क्षा.१ क्षायो.१८औद.१५ पा.३
अवगाहना	—	सं. घनां. से १००० योजन तक
योनि		२२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

शुक्ललेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	मिथ्यात्व से सयोगकेवली तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	३	मनुष्यगति तिर्यंचगति व देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	अ.सं.संयमासंयम तीनोंसे रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी व अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	व्युपरत क्रिया या निवृत्ति बिना
आश्रव	५७	सब व अतीत
भाव	४७	औ.२क्षा.६क्षायो.१८औद.१५पारि.३
अवगाहना	—	सं. घनां. से १००० योजन तक
योनि		२२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

अलेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	१४ व अतीत
जीवसमास	१	सं, पं. पर्याप्त व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१	आयु य अतीत
संज्ञा	×	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य गति व गतिरहित
इंद्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय जाति व अतीत
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व कायरहित
योगमार्गणा	१	योग रहित (अयोग)
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय (कषाय रहित)
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात व अ.सं. संयमासंयम रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	१	व्युपरतक्रिया निवृत्ति व अतीत
आश्रव	+	अतीत
भाव	१३	क्षायिक. ९ औदयिक २ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

भव्यत्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब (मिथ्यात्व से अयोगकेवली तक)
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
सञ्ज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी, अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवें भागसे १००० योजन
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

अभव्यत्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक काय २ व अयोग बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुति कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु दर्शन अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४,
आश्रव	५५	आहारक काय योग २ बिना
भाव	३३	क्षायो. १० औदयिक २१ पारि. २
अवगाहना	—	घनांगुल अस.भा.से १०००योजन तक
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

भव्यत्वमार्गणा के अनुभय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	०	प्रतीत
जीवसमास	०	प्रतीत
पर्याप्ति	०	प्रतीत
प्राण	०	प्रतीत
संज्ञा	०	प्रतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	०	प्रतीत
आश्रव	०	आस्रव रहित
भाव	५	क्षायिक भाव ४ पारिणामिक १
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि	०	+ प्रतीत
कुल	०	× प्रतीत

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	अविरत सम्यक्त्व से अप्रमत्तविरत तक
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१०	मन ४, वच० ४, औ. १ वै. १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुत अवधिज्ञान
संयममार्गणा	४	सामा. छेदो. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	प्रथमोपशम सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	४ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	४३	अविरति १२ कषाय २१ योग १०
भाव	३६	औ.१ क्षायो.१३ औद.२० पारि.२
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	४ स ११ अवि. से उपशान्तमोह तक
जीवसमास	२	सं पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	मब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	२३	मनुष्यगति, देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	मन.४ वच.४ औ१ वैमि. १ का. १
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबंधी४ व कषायरहित बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	६	परिहारविशुद्धि व अन्तिम बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आर्त ४, रौद्र ४ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	४४	अविरति १२ कषाय २१ योग ११
भाव	३७	औ.२ क्षायो.१५ औद.१८ पारि.२
अवगाहना	—	१ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१८ लाख
कुल		३८ लाख कोटि

औपशमिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	४ से ११
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१२	मन४ वचन ४ औ.१ वै.२ का. १
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबंधी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	६	परिहारविशुद्धि व अंतिम बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	औपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	४५	योग १२ कषाय २१ अविरति १२
भाव	३८	औ.२ क्षायो.१४ औद.२० पारि.२
अवगाहना	—	सं. घनांगुल से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	४ से ७ अवि. अप्रमत्तविरत तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुति अवधि मन:पर्ययज्ञान
संयममार्गणा	५	सामा.छेदो.परि. असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश:
ध्यान	१२	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४
आश्रव	४८	अविरति १२ कषाय २१ योग १५
भाव	३७	क्षायो. १५ औद. २० पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०८॥ लाख कोटि

क्षायिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	११	४ से १४ व अतीत
जीवसमास	२	संज्ञी पंचे. प. अ. व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब व अतीत
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	५	सब
इंद्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व कायरहित
योगमार्गणा	१६	सब
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबंधी ४ रहित
ज्ञानमार्गणा	५	मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय केवल
संयममार्गणा	८	सब
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	४८	अविरति १२ कषाय २१ योग १५
भाव	४६	औ.१क्षा.९क्षायो. १४औद.२० पारि.२
अवगाहना	—	१ हाथ से ३ कोश तक
योनि		
कुल		

संज्ञित्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२ मिथ्यात्व से क्षीणमोह तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ बिना
आश्रव	५७	रूप
भाव	४६	क्षायिक ७ बिना
अवगाहना	—	सं.घ. से१०००योजन तक संमू.घ.अं.
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

असंज्ञित्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व
जीवसमास	१२	संज्ञी पं० पर्याप्त व अपर्याप्त बिना
पर्याप्ति	५	मन बिना
प्राण	९	मनोबल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंचगति
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	४	अनुभय वचन योग १ औ.२ कार्माण१
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मिथ्यात्व सासादन सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४,
आश्रव	४५	मि.५ अविरति ११ कषाय २५ योग४
भाव	२७	क्षायो. ९ औद. १५ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक
योनि		६२ लाख
कुल		१३४।। लाख कोटि

संज्ञित्वमार्गणा के अनुभय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	सयोग के., अयोगकेवली व अतीत
जीवसमास	२	संज्ञी पं. पर्याप्त, अ. व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	वचनबल, का. श्वा. आयु/व अतीत
संज्ञा	×	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य गति व गतिरहित
इंद्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व कायरहित
योगमार्गणा	८	मन२ वचन२ औ.२ का.१ व अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यातचारित्र व तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	२	शुक्ल लेश्या व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	२	शुक्लध्यान २/व अतीत
आश्रव	७	योग ७ व अतीत
भाव	१४	क्षायिक ९ औद. ३ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व ×
कुल		१२ लाख कोटि व ×

आहारक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	१ से १३ मि० से सयोगकेवली तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१४	कार्माणकाययोग व योगरहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी व अनुभय
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	व्युपरत क्रिया निवृत्ति बिना
आश्रव	५६	कार्माण योग बिना
भाव	५३	सब
अवगाहना	—	घनां. के असंख्यातवें भाग से १००० योजन तक
योनि		८४ लाख कोटि
कुल		१९७॥ लाख कोटि

अनाहारक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	१, २, ४, १३, १४,
जीवसमास	८	अपर्याप्त ७ प १
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	७	मन. वचन. श्वास बिना/व अतीत
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	५	सब
इन्द्रियजातिमा०	६	सब
कायमार्गणा	७	सब
योगमार्गणा	१	कार्माणकाययोग व योग रहित
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय व कुअवधि ज्ञान बिना
संयममार्गणा	३	असंयम, यथाख्यात तीनों से रहित
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	३	भव्य अभव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यग्मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	क्रमश: व युगपत्
ध्यान	१४, १२	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४ शुक्ल२
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	४८	औ.१क्षा.९क्षायो.१४ औद.२१ पा.३
अवगाहना	+	घनां. असं. से १००० योजन पर्यंत
योनि	+	८४ लाख व अतीत
कुल		१९७॥ लाख कोटि व अतीत

धर्मप्रेमी बन्धुवों !

यदि आप सरल उपायों से आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञान व शान्ति चाहते है तो अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्यश्री क्षु० १०५ मनोहर जी वर्णी सहजानद महाराज के रचित व प्रवचन ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य कीजिये ।

प्रकाशित अप्रकाशित छोटे बड़े इन समस्त ग्रन्थों का नाम सहजानन्द साहित्य सेट है जो अध्यात्मग्रन्थ सेट, प्रवचनशीर्ष सेट, अध्यात्मप्रवचन सेट, दार्शनिक सेट, विज्ञान सेट व विद्या सेट इन छह सेटों मे विभक्त है। ये ग्रन्थ आपके पास न हों तो स्वाध्याय करने कराने के अर्थ मगा लीजिये। पूर्ण सेट मंगाने के लिये स्टेशन का नाम लिखें, क्योंकि एक-एक प्रकार की एक एक पुस्तक रखने पर पार्सल का वजन इस समय ३५ किलो हो जाता है। आगे और भी वजन बढ़ जायेगा। सदस्य बनने पर अब तक के ग्रन्थ जितने प्रकाशित उपलब्ध हैं वे सब भेंट भेजे जा है तथा आगे जो छपते रहेंगे, वे भी भेंट आते रहेंगे ।

अध्यात्मग्रन्थ सेट—इसमें आत्म संबोधन सहजानन्द गीता आदि १२६ ग्रन्थ हैं जिनमें अब तक करीब आधे प्रकाशित हो गये हैं।

प्रवचनशीर्ष सेट—इसमें प्रवचन ग्रन्थों के शीर्षों का संग्रह है करीब छोटे-बड़े ७७ ग्रन्थ हैं जो अभी तक प्रकाशित नहीं है, प्रकाशित होने वाले हैं ।

अध्यात्म प्रवचन सेट—इसमें धर्म प्रवचन, प्रवचन सार, प्रवचन भाग, संयमसार प्रवचन आदि छोटे-बड़े सब करीब २०८ पुस्तकें हैं ।

दार्शनिक सेट—इसमें अष्टसहस्री प्रवचन भाग प्रमेयकमलमार्तण्ड प्रवचन भाग आदि छोटे बड़े सब ग्रन्थ करीब ६० है।

विद्या सेट—इसमें प्रारंभिक ज्ञान के लिये, व विद्यार्थियों के लायक करीब २५ पुस्तकें हैं ।

विज्ञान सेट—इसमें धर्म संबंधित विविध विषयों पर करीब ३५ पुस्तकें हैं ।

विशेष यदि द्रव्य देकर ही ग्रन्थ लेना चाहें तो पूरा स० साहित्य सेट लेने पर उनकी लागत पर ४० प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा। कम सेट लेने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा। संस्था का सदस्य बनने पर सर्व पुस्तकें भेंट दी जाती है व वर्णी प्रवचन मासिक भेंट दिया जाता हैं ।

पता—**मंत्री सहजानन्द शास्त्रमाला**
१८५-ए रणजीतपुरी सदर मेरठ (उ० प्र०)

परमात्म आरती

(प्रत्येक धार्मिक शिक्षालयों में-सामूहिक प्रार्थना के लिये)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः,

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

ॐ जय जय अविकारी ।

जय जय अविकारी, स्वामी जय जय अविकारी ।
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी । ॐ ॥ टेक ॥

काम क्रोध मद लोभ न माया, समरस सुखधारी ।
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेशहारी । ॐ ॥१॥

हे स्वभावमय जिन तुम चीना, भव संतति टारी ।
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपति भारी । ॐ ॥२॥

परसंबंध बंध दुख कारण, करत अहित भारी ।
परम ब्रह्मका दर्शन, चहुंगति दुखहारी । ॐ ॥३॥

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनि मन संचारी ।
निर्विकल्प शिवनायक, शुचि गुन भंडारी । ॐ ॥४॥

बसो बसो हे सहज ज्ञानधन, सहज शान्तिचारी ।
टलैं टलैं सब पातक, परबल बलधारी । ॐ ॥५॥